हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

दिसम्बर, 2007 वर्ष 6 अंक 10

मक्के के मुसाफिर

मक्के के ऐ मुसाफ़िर मुझ को भी याद रखना
मब्रूर हज हो हासिल मेरी दुआ ये लेना
रौज़े पे जब हो हाज़िर रोकर सलाम पढ़ना
अपना सलाम पढ़ कर मेरा सलाम कहना
शैख़ैन जो वहां हैं उनको सलाम कहना
अपना सलाम पढ़ना मेरा सलाम कहना

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही !

मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

❐	इनसानीयत	सम्पादकीय.....3
❐	कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी 5
❐	कुर्आन की फरियाद	माहिरूल क़ादिरी 6
❐	प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम 7
❐	तुझ को तनमन अतिर्पत है	क़ारी हिदायतुल्लाह सिद्दीक़ी 9
❐	भारत का संक्षिप्त इतिहास	स० अबूज़फर नदवी 10
❐	संसार के नक्शे और गुलोब	डा० एम० नसीम 13
❐	कादियानीयत का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं	इदारा 14
❐	हज्ज की जरूरी बातें	इदारा 15
❐	मुनाजात	अमतुल अ़ज़ीज़ 15
❐	औरतों के लिए पर्दा	डॉ० ज़ाकिर नाइक 16
❐	आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा 19
❐	लैप टाप मर्दों को बांझ कर सकता है	ग्रहीत 21
❐	ठीक कैसे है ?	डॉ० स्वर्ण किरण 21
❐	शिक्षण तथा प्रशिक्षण	अफ्जल हुसैन 22
❐	एक लीड़र जिसे भुला दिया गया	कुलदीप कौर 25
❐	इन्सान दोस्ती और कुर्आन	ज़हीर अहमद सिद्दीक़ी नदवी 27
❐	सरवरे अंबिया (सल्ल०)की जियारत	मौ० अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह़० 32
❐	जाड़ों के पोष्टिक हल्वे	इदारा 34
❐	दुआ में तवस्सुल	इरफ़ान फारूक़ी 35
❐	भारतीय इतिहास	प्रो. नेत्र पाण्डेय 36
❐	फजाइले जुमा	अबू ओमामा 38
❐	यादगारे मदीना	मजजूब 38
❐	आतंक दर आतंक	डॉ० ज्ञान सिंह मान 39
❐	अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी 40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

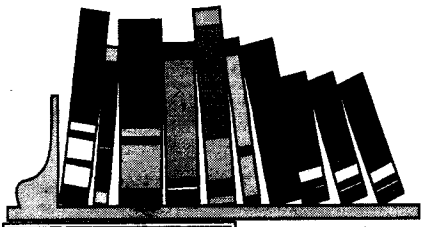

इन्सानीयत (मानवता)

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

यक़ीनन ज़माने में इन्सान एक ऐसा वक्त गुज़र चुका है जब कि यह ज़िक्र के क़ाबिल चीज़ न था, हम ने इन्सान को एक ऐसे नुत्फ़े से बनाया जो मुख़्तलिफ़ अजज़ा से मुरक्कब था और इस तौर पर बनाया कि हम इस की आज़माइश करें। पस हम ने उसको सुनता देखता बनाया हम ने उस को रास्ता बता दिया वह शुक्र गुज़ार हो गया या ना शुक्रा हो गया । (अद्दहर ७६:१–३)

ऐ ईमान वालो! तुम शैतान के नक़्शे कदम पर न चलो और जो शख़्स शैतान के क़दम क़दम चलेगा तो शैतान तो बे हयायी और ना मअ़क़ूल ही काम करने को कहेगा। (अन्नूर २४:२१)

तारीख़ वाले साबित करते हैं कि इन्सान शुरूअ़ में जानवरों जैसी ज़िन्दगी गुज़ारता था, फिर तरक़्क़ी करते करते मौजूदा मुहज़्ज़ब इन्सान बना। तारीख़ की यह बात सहीह़ है, इसको समझने के लिए आदम (अ़०) की औलाद का एक वाक़िआ़ सुनिये –

ह़ज़रत आदम (अ़०) की औलाद में पहले जुड़वां बच्चे पैदा होते थे, एक लड़का, एक लड़की, उनकी शरीअ़त में बहन भाई में शादी जायज़ थी, फिर भी आदम (अ़०) एक जोड़े की लड़की की शादी दूसरे जोड़े के लड़के के साथ करते थे। इस तरह़ एक जोड़ा पैदा हुआ जिसमें लड़की के साथ लड़का क़ाबील पैदा हुआ, दूसरे जोड़े की लड़की के साथ लड़का हाबील पैदा हुआ। ह़ज़रत आदम (अ़०) ने ह़स्ब ज़ाब्ता (नियमानुसार) बदल कर शादी करना चाही तो क़ाबील ने मुतालबा किया कि उस की शादी उसी लड़की के साथ होगी जो उस के साथ पैदा हुई है, अस्ल में वह ज़ियादा ख़ूबसूरत थी। आदम (अ़०) ने बहुत समझाया पर वह न माना आख़िर कार आदम अ़लैहिस्सलाम ने फ़ैसला किया कि तुम दोनों अपनी अपनी क़ुर्बानी पेश करो जिस की क़ुर्बानी क़बूल हो जाए उस के साथ शादी हो जाए।

उस वक़्त क़ुर्बानी का तरीक़ा यह था कि क़ुर्बानी की चीज क़ुर्बान गाह में रख दी जाती आसमान से एक आग आती और जिस की क़ुर्बानी क़बूल होती उस को खा जाती और जिस की क़ुर्बानी क़ुबूल न होती उसे छोड़ देती। ऐसा लगता है हिन्दू ह़ज़रात में अग्नि पूजा और यज्ञ आदम (अ़०) की शरीअ़त की क़ुर्बानी की बिगड़ी हुई शक्ल है।

हाबील क़ुर्बानी के लिये एक दुंबा लाए जब कि क़ाबील कुछ फल फ्रूट लाया और दोनों ने क़ुर्बान गाह में रख दिया, आग आई और हाबील की क़ुर्बानी को खा गई और क़ाबील की क़ुर्बानी को छोड़ गई। क़ाबील फिर भी न माना उस ने हाबील को रास्ते से हटाने का इरादा कर लिया। ह़ज़रत आदम (अ़०) उस वक़्त मक्का मुकर्रमा गये हुए थे। क़ाबील ने हाबील से कहा मैं तुझे ज़रूर क़त्ल करूंगा। हाबील ने कहा इसमें मेरा क्या क़ुसूर अल्लाह तआ़ला परहेज़गारों की क़ुर्बानी क़बूल करता है। तुम मुझे क़त्ल करना चाहते हो मैं तो तुम्हारी तरफ़ हाथ भी न बढ़ाऊंगा, तुम मुझे क़त्ल करोगे इस गुनाह के बदले में जहन्नम में जाओगे। पस क़ाबील पर तो नफ़्स व शैतान दोनों सवार थे। शैतान ने क़ाबील को क़त्ल का तरीक़ा लिखाया– क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया, उस की समझ में न आ रहा था कि लाश को कहां छुपाए कि आदम (अ़०) को ख़बर न हों। वह लाश

को छुपाए हुए लिये लिये फिरता था, यह पहला इन्सानी क़त्ल था। और ज़मीन पर पहली इन्सानी मौत थी क़ाबील हैरान था कि क्या करे? अल्लाह तआ़ला ने एक कौए के ज़रिअ़े क़ाबील को दफ़न की तअ़्लीम दी, एक कौए ने क़ाबील के सामने एक मुर्दा कौए को चोंच पंजों से गढ़ा खोद कर छिपा दिया, क़ाबील शर्मिन्दा हुआ कि मैं कौए से भी गया गुज़रा हुआ उस ने भी गढ़ा खोद कर भाई को मिट्टी में छुपा दिया। यह पहली क़ब्र थी जो ज़मीन पर बनी। ऊपर आया कि शैतान ने क़ाबील को बहकाया और क़त्ल का तरीक़ा सिखाया यह शैतान कौन है? यह भी अल्लाह की एक मख़्लूक है, अल्लाह ने अपनी मसलहत से इसे पैदा फ़रमाया और इन्सान की आज़माइश के लिए उस को इन्सान का दुश्मन बनाया, दुन्या में सारी बुराइयां शैतानी कोशिशों से होती हैं। इन्सान को इन्सानियत से गिराने का काम शैतान ही का है। इस की दुशमनी का क़िस्सा और बयान क़ुर्आने मजीद में बहुत जगह आया है, एक जगह का बयान मुलाहज़ा हो –

और बिला शुब्हा हम ने इन्सान को मिट्टी के सड़े हुए गारे से पैदा किया जो सूख कर खन–खन की आवाज़ देती थी और जान्न यअ़्नी अबुल जिन्नात को इन्सान की पैदाइश से पहले हमने लू की आग से पैदा किया, और ऐ पैग़म्बर वह वक़्त क़ाबिले ज़िक्र है जब आप के रब ने फ़िरिश्तों से कहा कि मैं सड़े हुए गारे की मिट्टी से जो सूख कर खन–खन आवाज़ देती है, एक बशर को पैदा करने वाला हूं, फिर मैं जब उस को दुरुस्त कर चुकूं और उस में अपनी तरफ़ से रूह फूंक दूं तो तुम सब उस के सामने सज्दे में गिर पड़ना, चुनांचि सारे के सारे तमाम फ़िरिश्तों ने आदम के सामने सजदा किया, मगर इब्लीस ने कि उस ने सज्दा करने वालों में शामिल होने से सरताबी की। इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, ऐ इब्लीस तुझ को क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ? उस ने जवाब दिया मैं ऐसा नहीं हूं कि उस इन्सान के सामने सज्दा करूं। जिस को आप ने मिट्टी के ऐसे सड़े गारे से बनाया है जो ख़ुश्क हो कर खन–खन की आवाज़ देता है। ख़ुदा ने कहा जा निकल यहां से बेशक तू मरदूद है। और बेशक तुझ पर क़ियामत के दिन तक लअ़्नत रहेगी। शैतान ने कहा ऐ मेरे रब उस दिन तक के लिए मुझ को मुहलत दे जिस दिन लोग क़ब्रों से उठाए जाएंगे। ख़ुदा ने कहा बिला शुब्हा तुझ को मुहल्लत दी गयी, उस मुक़र्ररा दिन तक यअ़्नी क़ियामत तक। इस पर उस ने कहा ऐ मेरे रब जैसा तू ने मुझ को अपनी रहमत से महरूम किया है मैं भी ज़मीन में गुनाहों को आदम की औलाद की नज़र में बहुत अच्छा करके दिखाऊं गा और उन सब को गुनाह पर उभारूंगा यअ़्नी सीधी राह से भटकाऊंगा सिवाए तेरे मुख़लिस बन्दों के, रब ने कहा यह मुख़लिसीन का रास्ता मुझ तक पहुंचने का सीधा रास्ता है, बेशक मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा कुछ भी क़ाबू न चलेगा सिवाय उन लोगों के जो भटक कर तेरे पीछे चलें। (अल–हिज्र : २६–४२)

हाबील मुख़लिसीन में से थे, शैतान की उन पर न चली वह इन्सानीयत का अ़ला नमूना (उच्चादर्श) थे,? क़ाबील भटके हुओं में से था, ख़ूबसूरत औरत के लिए भाई को क़त्ल किया वह इन्सानीयत से गिर गया, क़ाबील जैसे सारे इन्सान इन्सानीयत से गिरे हुए हैं, तारीख़ की बात सही है यही शुरूअ़ में नंगे फिरे, जानवरों जैसी ज़िन्दगी गुज़ारी, खोहों में रहे कच्चा गोश्त खाया, गन्दगियों में रहे, जानवरों की तरह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी की, सीखने की सलाहीयत थी तभी तो कौए से सीख लेकर भाई को दफ़न किया था आज जो उन्होंने तरक़्क़ी की तो आसमान पर उड़ने लगे लेकिन भाई बहनों के साथ बरताव में भी ख़ूब तरक़्क़ी की, क़ाबील ने तो एक औरत के लिए भाई को क़त्ल कर के लाश लिये फिरता था लेकिन बुश और मोदी जैसों ने इन्सानों

(शेष पृष्ठ ६ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

अंबिया अलैहिमुस्सलाम :

तर्जमा : और आप से पहले जितने रसूल भी हम ने भेजे वे सब खाना खाते थे, और (अपनी जरूरतों से) बाजारों में चलते फिरते थे। (अलफुरकान–२०)

और खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बार–बार हुक्म दिया गया कि अपने बारे में साफ–साफ उन लोगों से कह दीजिए और एलान कर दीजिए कि :

तर्जमा : मैं तो तुम्हारी ही तरह एक इन्सान हूं। (कह्फ़ ११०)

और पैगम्बरों के बारे में जियादती ही की सिलसिले की एक गुमराही यह थी कि उन के लिए जरूरी समझा जाता था कि सारी काईनात पर उन का अधिकार और इख्तियार हो और वे सब कुछ कर सकते हों। इस बुन्याद पर रसुल्लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने के मुनकिरीन ने आप (स०) से कहा था। कुरआन का बयान है।

तर्जमा : ये मुनकिरीन कहते हैं कि हम हरगिज तुम पर ईमान न लायेंगे जब तक कि तुम ऐसी बातें कर के न दिखा दो (मसलन् यह कि) तुम हुक्म करो और जमीन से चश्मा फूट निकले, या तुम्हारे लिये खजूर और अंगूर का एक बाग लग जाये और फिर तुम उस में पानी की बहुत सी नहरें जारी करके दिखाओ, या जैसे कि तुम कहा करते हो आस्मान के टुकड़े हम पर गिराओ, या अल्लाह को और फरिश्तों को हमारे सामने ले आओ, या तुम्हारे लिये सोने का एक घर बन जाए, या तुम उड़ते हुए आसमान में चढ़ जाओ और हम तुम्हारे इस चढ़ जाने को भी नहीं मानेंगे जब तक ऐसा न हो कि तुम आसमान से एक लिखी लिखाई किताब हमारे पास उतार लाओ, जिस को हम पढ सकें।(६०:६३)

मगर कुर्आने–मजीद में इन सब मांगों के जवाब में रसूलुल्लाह सल्लललाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया गया कि :

तर्जमा : आप उन से कह दीजिए, सुबहानल्ला (मैं कोई खुदा हूं) मैं इस के सिवा कुछ नहीं कि एक आदमी हूं खुदा का पैगाम पहुंचाने वाला। (बनी इस्राईल : ६३)

इस मुख्तसर आस्मानी जवाब का मतलब यही है कि ऐ मुनकिरो तुम्हारी यह बुन्यादी गलती है कि तुम समझते हो कि नबी व रसूल वह होता है जिस के कब्जे व इख्तियार में सब कुछ हो और जमीन व आस्मान पर उस का "कुन् फयकूनी"। अधिकार हो। हालांकि यह शान खुदा की है। बेशक वह किसी चीज से आजिज नहीं। उस की कुद्रत में सब कुछ हैं। लेकिन मेरी हैसियत तो सिर्फ यह है कि मैं तुम में का और तुम्हारी जिन्स का एक इन्सान हूं। जिस को अल्लाह ने रिसालत व पैगम्बरी का काम और मकाम अता फर्मा दिया है। मैं इस से जियादा किसी चीज का दावेदार नहीं।

इसी तरह सूर ए अनकबूत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुनकिरीन ने आप से कहा कि जो मोजिजे (चमत्कार) और जो निशानियां हम चाहते हैं वह आप क्यों नहीं दिखाते? तो इस का जवाब भी आप (स०) से वही दिलवाया।

तर्जमाः आप इन से कह दीजिए कि मोजिजे और निशानियां तो अल्लाह के इख्तियार में हैं। (उन पर मेरा इख्तियार नहीं) मैं तो बस साफ–सफ आगाही देने वाला और होशियार करने वाला अल्लाह का पैगम्बर हूं। (अनकबूत : ५०)

और इसी गुलू (जियादती) को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए एक दूसरी जगह आप को हुक्म दिया गया कि –

तर्जमा : आप कह दीजिए कि मैं तुम से नहीं कहता कि अल्लाह के खजाने मेरे इख्तियार में हैं। और न (मैं यह कहता हूं कि) मुझे इल्मे–गैब है और न मैं कहता हूं कि मैं फरिश्ता हूं (मेरा हाल तो यह है कि) जो वही अल्लाह की तरफ से मुझ पर की जाती है और जो हुक्म मुझे दिया जाता है मैं तो बस उसका इत्तेबाअ करता हूं। (अनआम : ५०)

और इसी मक्सद के लिए आप

(स०) से एलान कराया गया :

तर्जमा : आप कह दीजिए कि ऐ लोगो। मैं नहीं मालिक हूं तुम्हारे नुक्सान का और तुम्हारी भलाई का (यअनी तुम्हारा बनाव–बिगाड़ मेरे इख्तियार में नही, बल्कि सब कुछ अल्लाह के इख्तियार में है, आप कह दीजिए कि (खुद मेरा मुआमला यह है कि) मुझे भी नहीं बचा सकता अल्लाह के हाथ से कोई और मैं नहीं पा सकता उस के सिवा कोई पनाह की जगह, और कोई ठिकाना । (अलजिन्न : २१, २२)

तर्जमा : आप एलान फर्मा दीजिए कि मैं खुद अपनी जात के नफे नुक्सान का भी मालिक व मुख्तार नहीं हूं, मगर जो अल्लाह चाहे वही होता है (सब कुछ उसी के इरादे और उसी के फैसले पर मौकूफ (अवलंबित) है। और अगर मैं गैब की बात जान लिया करता तो बहुत कुछ फाइदे हासिल कर लेता और किसी वक्त कोई नागवारी और मर्जी के खिलाफ कोई बात मुझे पेश न आती। मैं तो बस सुनाने वाला हूं, ईमान व यकीन वालों को। (अल अअराफ : १८८)

इन सब आयतों में नबी की शान में इसी "जियादती" की बीख कनी (मूल नाश) की गयी है, जो नबियों के बारे में बहुत सी कौमों और उम्मतों में मुखतलिफ जमानों में रही है, और आज भी मौजूद है। यहां तक कि खुद कुर्आन के मानने वाले बहुत से मुसलमान जिहालत और नादानी की वजह से इस में मुब्तला हैं। वे समझते हैं कि अल्लाह के खजानों पर रसूल का इख्तियार और अधिकार होना चाहिए और उन को गैब का इल्म भी होना चाहिए और दीन–व–दुन्या और आखिरत के बारे में उन को बिलकुल मुख्तार होना चाहिए। हालांकि मालूम हो चुका है कि कुरआने – मजीद ने इन तमाम गुमराही के ख्यालों व बेढंगी बातों का पूरी सफाई के साथ रद्द (खण्डन) किया है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

के साथ जो कुछ किया दुन्या जानती है। वह अपने किये पर शर्मिन्दा नहीं हैं बल्कि उन को इस पर नाज़ है, इस लिऐ कि शैतान ने उनके घिनावने अअ्माल अच्छा कर के दिखाया और दिखा रहा है।

सुवाल यह है कि नफ्स व शैतान से बचने और बचाने की क्या तदबीरें हैं जिनको अपना कर अपने को इन्सान बाकी रखा जाए और दूसरे भाईयों को इन्सानियत से गिरने न दिया जाए? सीधा सा जवाब है मुख्लिस बना जाए और दूसरों को मुख्लिस बनाया जाय।

कुर्आन की फरियाद

माहिरुल कादिरी

ताकों में सजाया जाता हूं, आंखों से लगाया जाता हूं
तअवीज बनाया जाता हूं, धो धो के पिलाया जाता हूं
जुजदान हरीर व रेशम के, और फूल सितारे चान्दी के
फिर इत्र की बारिश होती है, खुश्बू में बसाया जाता हूं
जैसे किसी तोता मैना को, कुछ बोल सिखाए जाते हैं
इस तरह पढ़ाया जाता हूं, इस तरह सिखाया जाता हूं
दिल नूर से खाली रहते हैं, आंखें हैं कि नम होती ही नहीं
कहने को मैं इक इक जल्से में, पढ़ पढ़ के सुनाया जाता हूं
जब कौल व कसम लेने के लिये, तकरार की नौबत आती है
फिर मेरी जरूरत पड़ती है, हाथों में उठाया जाता हूं
नेकी पे बदी का गल्बा है, सच्चाई से बढ़ कर धोखा है
इक बार हंसाया जाता हूं, सौ बार रूलाया जाता हूं
हैं मेरी अकीदत के दअवे, कानून पे राजी गैरों के
यूं भी मुझे रुस्वा करते हैं, ऐसे भी सताया जाता हूं
किस बज्म में मेरा जिक्र नहीं, किस उर्स में मेरी धूम नहीं
फिर मैं भी अकेला रहता हूं, मुझ सा भी कोई मज्लूम नहीं

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

बाप के दोस्त के साथ सुलूक

हजरत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया नेकियों में बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने बाप के दोस्त के साथ सुलूक करे।

हजरत अब्दुल्लाह इब्नि उमर का हजरत उमर (र०) के दोस्त के साथ सुलूक

हजरत अब्दुल्लाह (र०) बिन दीनार से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उमर (र०) को मक्का के रास्ते में एक देहाती आदमी मिला। उन्होंने उसको सलाम किया और जिस गधे पर वह सवार होते थे उस पर उसको सवार किया। और अपना वह अमामा दिया जिसको अपने सर पर बांधा करते थे। मैंने कहा अल्लाह तुम्हारा भला करे यह एक देहाती आदमी है, थोड़ी बात से खुश होने वाला है। अब्दुल्लाह इब्नि उमर ने कहा इसके वालिद मेरे वालिद उमर (र०) बिन अलखत्ताब के दोस्त थे। और मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुना है, फरमाते थे कि नेकियों में बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने बाप के दोस्त के साथ अच्छे सुलूक करे।

वालदैन के इन्तिकाल के बाद हुस्ने सुलूक

हजरत मालिक (र०) बिन रबीअ से रिवायत है कि हम नबी (सल्ल०) के पास बैठे थे। बनी सलमः का एक आदमी आया और कहा या रसूलुल्लाह! क्या कुछ नेकी बाकी है कि मैं अपने वालिद के मरने के बाद करूं। आपने फरमाया, हां, उनके लिए दुआ करना इस्तिगफार करना और उनके बाद उनके अहद को पूरा करना और उनके रिश्तों को जोड़ना जो उनके बगैर नहीं जोड़े जाते। और उनके दोस्तों की अिज्जत करना। (अबूदावूद)

बीवी के इन्तिकाल के बाद उसकी याद और मुहब्बत

हजरत आयशाः (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी (सल्ल०) की किसी बीवी पर रश्क नहीं किया, सिवा हजरत खदीजः (र०) के। मैंने उनको नहीं देखा था मगर आप उनका कसरत से जिक्र फरमाते थे और जब कोई बकरी जिबह करते उसका कोई टुकड़ा हजरत खदीजः (र०) की सहेलियों को भेजते और मैं आपसे अक्सर कहती कि क्या आपकी दुनिया में कोई बीवी नहीं सिवा हजरत खदीदा (र०) के। तो आप फरमाते कि वह ऐसी थीं ऐसी थीं। मुझे अल्लाह ने उनसे औलाद दी। (बुखारी–मुस्लिम)

और एक रिवायत में है कि अगर आप कोई बकरी जिबह करते तो हजरत खदीजः (र०) की सहेलियों को इतना हदयः भेजते जो उनको काफी होता। और एक रिवायत में है कि जब बकरी जिबह करते तो फरमाते कि खदीजा की सहेलियों को भेजो। और एक रिवायत में है कि हजरत खदीजा (र०) की बहिन हालः ने आप के पास आने की इजाजत चाही। आपने आवाज सुनी तो समझे हजरत खदीजः (र०) इजाजत मांग रही हैं। आप खुश हुए। फिर फरमाया ओहो यह हालः बिन्त खुवैलिद हैं।

अन्सार की खिदमत

हजरत अनस (र०) बिन मालिक से रिवायत है कि एक सफर में जरीर (र०) बिन अब्दुल्लाह और मैं साथ था। वह मेरी खिदमत करते थे। मैंने उनको रोका तो वह कहने लगे मैंने अन्सार को देखा है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ऐसा ही करते थे तो मैंने कसम खाई कि मैं जब उनमे किसी के साथ रहूंगा तो उसकी खिदमत करूंगा। (बुखारी–मुस्लिम)

अहले बैत के बारे में रसूलुल्लाह सल्ल० की वसियत

हजरत यजीद बिन हय्यान से रिवायत है कि मैं और हुसैन बिन सबरः और उमर बिन मुस्लिम, जैद बिन अरकम के पास आये। जब हम उनके पास बैठे तो उनसे हुसैन बिन सबरः ने कहा, ऐ जैद! तुमने बड़ी दौलत पायी है। तुमने रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम को देखा, आपकी बातें सुनीं, आपकी मइयत में लड़े, आपके पीछे नमाज पढ़ी। ऐ जैद! तुमने बड़ी दौलत पायी, ऐ जैद! तुमने जो कुछ रसूल्लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है हमसे बयान करो। हजरत जैद (र०) ने कहा, ऐ भतीजे ! खुदा की कसम मैं बूढ़ा हो गया और

मेरा जमाना पुराना हो गया। पस जो कुछ मैं तुमसे कहूं उसको कुबूल करो। और जो न कह सकूं उस पर मजबूर न करो। फिर कहने लगे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस तालाब पर जिसका नाम खुम है (मक्का और मदीना के दर्मियान है) हमारे दर्मियान खड़े खुतबा फरमा रहे थे। अल्लाह की तारीफ और सना के बाद फरमाया, ऐ लोगो, मैं भी एक आदमी हूं। करीब है कि मेरे परवरदिगार का कासिद मेरे पास आये और मैं उसको कबूल करूं। मैं तुम में दो चीजें छोड़ने वाला हूं, उनमें अव्वल अल्लाह की किताब है जिसमें हिदायत और नूर है। बस तुम अल्लाह की किताब लो और उसको मजबूत पकड़ो। फिर अल्लाह की किताब की तरगीब दी और रगबत दिलायी और फरमाया दूसरी चीज मेरे घर वाले हैं। तुमको याद दिलाता हूं उनके बारे में अल्लाह को। तुमको याद दिलाता हूं उनके बारे में अल्लाह को। हुसैन ने उनसे कहा, ऐ जैद! आप (सल्ल०) के घर वाले कौन हैं। क्या आप (सल्ल०) की बीवियां आपके घरवालों में नहीं हैं। हजरत जैद (र०) ने कहा आप (सल्ल०) की बीवियां आपके घरवालों में हैं लेकिन यहां वह घरवाले मुराद हैं जिन पर सदका हराम है। कहा वह कौन है? हजरत जैद (र०) ने कहा वह आले अली (र०) हैं, आले अकील (र०) हैं, आले जाफर (र०) आले अब्बास (र०) हैं । (हुसैन ने पूछा इन सब पर सदका हराम है) कहा हां, (मुस्लिम)

और एक रिवायत में है कि खबरदार हो मैं तुममें दो चीजें छोड़ने वाला हूं। उनमें एक अल्लाह की किताब। वह अल्लाह की रस्सी है। जो उसको पकड़ेगा वह हिदायत पर है। जो इसको छोड़ेगा वह गुमराही पर है।

हजरत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि हजरत अबू बक्र (र०) ने फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आपके घरवालों के बारे में लिहाज रक्खो।

इमामत के लिए क्या तरतीब है

हजरत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जो अल्लाह की किताब जियादः पढ़ने वाला हो, वह लोगों की इमामत करे। अलग किराअत में सब बराबर हों तो सुन्नत का जियादः जानने वाला इमामत करे। अगर सुन्नत में सब बराबर हों तो जो हिजरत में मुकद्दम हो। अगर हिजरत में भी बराबर हों तो फिर जो उमर (अुम्र) में बड़ा हो वह इमामत करे और कोई किसी इमाम के असर की जगह इमामत न करें। और उसके घर में उसके अिज्जत की जगह पर न बैठे। जब तक वह हुक्म न दे। (मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि जो इस्लाम में साबिक हो वह इमामत करे। एक रिवायत में है कि लोगों की इमामत उसको करना चाहिए जो अल्लाह की किताब सब से जियादः पढ़ने वाला हो अगर किराअत में बराबर है तो जो हिजरत में मुकद्दम है उसको इमामत करना चाहिए। अगर हिजरत में बराबर हैं तो जिसकी उम्र बड़ी हो वह इमामत करे।

अहले अक्ल को तरजीह

हजरत इबिन मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे शानों पर हाथ फेरते थे और फरमाते थे कि बराबर रहो, आगे पीछे रहोगो तो तुम्हारे दिल मुख्तलिफ हो जायेंगे और जो तुममें अक्ल वाले हैं वह मेरे करीब रहें। फिर जो उनके करीब हैं फिर जो उनके करीब हैं। (मुस्लिम)

हजरत अब्दुल्लाह (र०) बिन मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो तुममें अक्ल वाले हैं वह मेरे करीब रहें, फिर जो उनके करीब हैं। आपने तीन मर्तबा फरमाया, तुम बाजारों के शोर व शर से बचो।

जियादा उम्र वाला मुकद्दम है

हजरत अबू यह्या (र०) और सहल बिन अबू हुसैमः से रिवायत है कि अब्दुल्लाह (र०) बिन सहल और मुहय्यिसः बिन मस्ऊद (र०) खैबर गये। वहां पहुंच कर दोनों अलग–अलग हो गये। जब मुहय्यिसः अब्दुल्लाह (र०) बिन सहल के पास आये तो उनको खून में लतपत कत्ल किया हुआ पाया, उनको दफन करके मदीना आये। अब्दुर–रहमान, सहल, मुहय्यिसः और हुवैसः (यह दोनों मस्ऊद के बेटे थे) नबी (स०) की खिदमत में आये और कत्ल का मुकद्दिमा पेश किया। अब्दुर्रहमान बिन सहल (मकतूल के भाई) ने गुफ्तगू शुरू की। वह छोटे थे, आपने फरमाया पहले बड़ा गुफ्तगू करे। पहले बड़ा गुफ्तगू करे।

जियादः कुर्आन का याद रखने वाला मुकद्दम है

हजरत जाबिर (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) अुहद में एक कब्र में दो शहीदों को रखते थे। आप फरमाते इन में कौन कुरआन जियादः हासिल

करनेवाला था? जब उनमें से एक की तरफ इशारः किया जाता तो आप उसको लहद में मुकद्दम रखते थे। (मुस्लिम)

जियादः उम्र वाला मुकद्दम है

हजरत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया मैंने ख्वाब देखा मैं एक मिस्वाक कर रहा हूं। मेरे पास दो आदमी आये, उनमें से एक बड़ा था। मैंने छोटे को मिस्वाक दी तो मुझसे कहा गया कि बड़े को मिस्वाक दो, तो मैंने बड़े को दी। (मुस्लिम)

तीन शख्सों की अिज्ज़त

हजरत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अल्लाह की अिज्जत यह भी है कि बूढ़े मुसलमान और हामिले कुरआन जो अल्लाह के हदों के अन्दर हो और मुन्सिफ बादशाह की अिज्जत की जाये। (अबू दावूद)

छोटों पर शफकत बड़ों की अिज्जत

हजरत उमर (र०) बिन शुऐब से रिवायत है कि वह अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्ल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, वह हम से नहीं है जो अपने छोटों पर रहम न करे और अपने बड़ों की अिज्जत न करे।

(पृष्ठ १३ का शेष)

(गैर साइंसी) और केवल अनुमानों पर आधारित था या जो तथ्यों से परे और प्रयोग की कसौटी पर खरा उतरने वाला नहीं था। मुसलमानों ने भूगोल और विज्ञान की जानकारी और हकाएक को परखने के लिए नये–नये प्रयोग किये और तरह तरह की अनुसंधान (तहकीक) परीक्षणों (मुशाहिदात) से काम लेकर उसे तजरबाती अभ्यासों द्वारा सही और सत्य साबित किया। मुस्लिम खलीफाओं और बादशाहों ने भूगोल और साइंस के प्रयोग करने के लिए बड़ी बड़ी प्रयोगशालाएं काइम कीं और कुर्आनी तालीमात से रोशनी पाकर प्रकृति जगत में फैले हुए छुपे हुए भेदों के एक के बाद एक प्रकट करने की कोशिशें कीं ताकि खुदा की खुदाई बड़ाई और उस की कलाकौशल और कुदरत को दुन्या के सामने पेश किया जा सके।

क्यों सर्द पड़ गया जो था जजबात का अलाव।
उड़ते थे जो लुहू में शरारे कहां गये।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

तुझ को तन मन धन सब अर्पित है

कारी हिदायतुल्लाह सिद्दीकी

भूत काल की हर एक घटना इस हृदय पर अंकित है
दुखियारों की आह से होना भस्म समझ लो निश्चित है
धन की लोभी दुनिया सारी मन उज्जवल फिर कैसे हो
किस को क्या समझा जाए हृदय सब का वंचित है।
इस को मारा उसको काटा आग लगाई गुलशन में
मन मानी जो चाहे कर लो न्याय का एक दिन निश्चित है।
पाप करो या पुण्य करो तुम भोगोगे खुद अन्तिम दिन
पढ़के देखो तो कुरआन इसमे सब कुछ अंकित है।
झूठ, दगा, मक्कारी, चोरी मद से दूर ही रहना तुम
हाथ किसी को तुम न लगाना क्योंकि हर एक वर्जित है
न्याय हुआ उत्कोच का भूखा दहशत कुछ ऐसे ही पनपा
दो फसली बातों से तुम्हारी मानवता भी विकलित है
मस्जिद मन्दिर निर्मित हैं पर आए न कोई पूजन को
शेख अकेला मस्जिद में तो, मन्दिर में बस पण्डित है
मुख से बोलो बन के सुबूही कानों में रस घोलो तुम
लोग कटें ये प्रेम की मद से कौन है जो उन्मादित है
राह हिदायत को दिखलाना सीधी, उसकी विनती है
ईश्वर यानी अल्लाह तुझको तन मन धन सब अर्पित है।

छठवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदवी

सय्यिदों का शासन

खिजिरखां जो पंजाब का हाकिम था दौलत खां लोदी से दिल्ली लेकर खुद १४१४ई० (८१७ हि०) में बादशाह बन बैठा और जब तक जिन्दा रहा बागियों से लड़ता रहा १४२१ ई० में उसका लड़का मुबारक शाह तख्त पर बैठा और अपनी मर्दाना हिम्मत से मुल्तान और पंजाब पर काबिज रहा और दो बारा शाह काबुल को भी, जो लाहोर तक आ गया था पराजित किया।

मंत्रियों ने कुछ दरबरियों से साजिश करके १४४५ ई० (८२५ हि०) में उसको कत्ल कर डाला और खिजिर खां के एक पोता मुहम्मद शाह के नाम से बादशाह बनाया गया। जौनपुर के बादशाह ने जब दिल्ली लेनाचाहा तो पंजाब के हाकिम बहलोल खां लोदी ने उस को बचाया। १४४५ ई० (८४६ हि०) में उस का देहान्त हो गया। अब उसके लड़के अलाउद्दीन ने हुकूमत की बाग डोर अपने हाथ में ली लेकिन यह इस कदर कम हिम्मत था कि दिल्ली के अतिरिक्त कुछ उसके कब्जे में न रहा और यह भी उससे न संभल सका। आखिर बदायूं जाकर उसने एकांतवास ले लिया और १४७६ ई० (८८२ हि०) में मर गया। दिल्ली की हुकूमत पर बहलोल खां लोदी ने कब्जा कर लिया।

लोदी खानदान का शासन

लोदी खरे पठान थे। फौज की अफसरी और प्रान्तों की गवर्नरी से बादशाही तक पहुंचे। पहले बहलोल लोदी फौज का एक अधिकारी था। मालवा की लड़ाई में उसने बड़ी बहादुरी दिखाई जिस से खुश होकर बादशाह ने पंजाब का हाकिम बना दिया। पंजाब से लेकर बिहार तक उस की हुकूमत थी। बहादुरों को बड़ा सम्मान देता था। अलाउद्दीन के बदायूं चले जाने पर दिल्ली का बादशाह हुआ। उस ने जौनपुर फतह करके अपनी सल्तनत में मिला लिया। चालीस वर्ष शासन करके १४८८ ई० (८९२ हि०) में उस का देहान्त हो गया।

उसके बाद उसका बेटा सुल्तान सिकन्दर लोदी तख्त पर बैठा। उस ने भी सारी उम्र दूसरे प्रान्तों को कब्जे में लाने और विद्रोहों के दमन में व्यतीत कर दी। उस ने एक ओर अपने राज्य की सीमा मालवा तक पहुंचा दी और दूसरी तरफ बंगाल से जा मिलाई। उसके बाद आमतौर पर शान्ति रही। अनाज को सस्ता करने की हमेशा कोशिश करता रहा। यह मुंसिफ बादशाह था, आदमियों की उसे अच्छी पहचान थी। उस ने बहुत से मकबरे, मदरसे और मस्जिदें बनवाईं। उस के जमाने में हिन्दू फारसी पढ़कर दफतरों में काम करने लग गये। २६ वर्षों के शासन के बाद १५१७ ई० (८२३) में उस का देहान्त हो गया।

सिकन्दर के बाद उसका लड़का इब्राहीम लोदी दिल्ली का बादशाह हुआ। पहले तो अपने भाई से जौनपुर के लिए लड़ता रहा। सफलता के बाद उसकी हिम्मत बढ़ी उस ने बहादुरी के साथ ग्वालियार का किला राजा से छीन लिया। कुछ दिनों के बाद उस को कुछ सरदारों की साजिश का पता चला तो वह उन को कड़ी सजाएं देने लगा यहां तक कि डर कर तमाम सरदार इधर उधर भाग निकले। दौलत खां लोदी जो लाहौर का हाकिम था, मुगलों के सरदार बाबर बादशाह को, जो काबुल पर काबिज था, दिल्ली पर विजय प्राप्त करने की दावत दी जिस को बाबर ने बड़ी खुशी से स्वीकार कर लिया। पहले अलाउद्दीन को जो बाबर के यहां नौकर था हरावल के तौर पर भेजा। इब्राहीम लोदी भी एक फौज के साथ उसके मुकाबले को आया। पहले तो अलाउद्दीन ने पराजित कर दिया लेकिन उसकी फौज जब लूट में लग गई तो इब्राहीम ने हमला कर के सब को भाग जाने पर मजबूर कर दिया। उधर बाबर भी काबुल से लाहौर पहुंच गया था और दौलत खां को जो बाबर के खिलाफ हो गया था, पराजित करके लाहौर पर कब्जा कर लिया और फिर दिल्ली की तरफ चला और इब्राहीम लोदी भी उस से असावधान न था एक बड़ी भारी फौज लेकर पानीपत के मैदान में पहुंच गया। बाबर की फौज भी इस के मुकाबले के लिए आमौजूद हुई। १५२६ ई० (९३३ हि०) में दोनों में युद्ध

शुरू हुआ। यद्यपि इब्राहीम लोदी के पास फौज बड़ी थी लेकिन उस के पास नए प्रकार के अच्छे हथियार न थे और फौज भी अनुभवी (तजुरबेकार) न थी। उधर बाबार की फौज में अनुभवी सिपाहियों के अतिरिक्त एक तोप खाना भी मौजूद था जिससे लोदी फौज परिचित न थी। बाबर ने इस तोप खाने द्वारा पहले दुश्मन की फौज को तितर बितर किया और फिर अनुभवी फौज का दस्ता लेकर इस प्रकार हमलाआवर हुआ कि इब्राहीम की फौज न ठहर सकी। खुद भी मारा गया और सारी फौज बुरी तरह पराजित हुई। बाबर विजयी होकर दिल्ली में दाखिल हो गया।

बाबर बादशाह :

बाबर दिल्ली से आगरा पहुंच कर सल्तनत का प्रबन्ध करने में व्यस्त हो गया। अभी कुछ दिन नहीं गुजर थे फिर राजा सांगा, जो हिन्दू राजाओं में सब से अधिक शक्ति शाली था, राजपूताना (राजिस्थान) से बड़ी फौज लेकर आगरा की तरफ बढ़ा। बाबर भी अपने चुने हुए सवारों के साथ तोप खाना लेकर अजमेर की तरफ चला। बयाना के पास दोनों का मुकाबला हुआ बड़े खूनखराबे की लड़ाई में बाबर विजयी हुआ और राजा संगा घायल होकर भागा और घर जाकर मर गया। बाबर ने मालवा के पास चन्देरी का मजबूत किला भी फतह कर लिया और जौनपुर से बंगाला तक के प्रान्त उस के कब्जे में आ गये। लेकिन अफसोस उम्र नहीं पाई। १५३० (६३७ ई०) में पचास वर्ष की उम्र में संसार से सिधार गया।

नसीरुद्दीन हिमायूं– जहीरूद्दीन बाबर के देहान्त के बाद उसकी वसीयत के अनुसार उसका बड़ा लड़का हुमायूं नसीरूद्दीन की उपाधि के साथ तख्त पर बैठा। अपने भाइयों को विभिन्न प्रान्तों की हुकूमत देकर कालेंजर के प्रान्त की घेराबन्दी की परन्तु पठानों की बगावत के कारण जौनपुर और चुनार गढ़ जाना पड़ा जहां से फरीद खां (शेरशाह) को, जो सहसराम (बिहार) का जमीनदार था, अधीन बनाकर वापस आया। १५३२ ई० (६३६ हि०) में गुजरात का मशहूर बादशाह बहादुरशाह कुछ बागी मुगलों को शरण (पनाह) देने के कारण नाराज हो गया और नौबत लड़ाई की आई। एक तुर्की तोपखाना अधिकारी रूमी खां की गद्दारी से बहादुरशाह की पराजय हुई और वह देवबन्दर चला गया और हुमायूं खंबात तक पीछा करते हुए पहुंचा था कि बिहार से फरीद खां की बागी होने की सूचना उस को मिली। हुमायूं आगरा वापस आकर कुछ फौज के साथ बिहार रवाना हो गया। फरीद खां अपनी औरतों, बच्चों और खजाने को रूहतास के किले में रख कर पहाड़ों में छुप गया। हिमायूं आसानी के साथ बंगाल तक पहुंच गया था मगर बरसात की वजह से वापस होना कठिन हो गया। उधर फरीद खां बिहार से निकल कर जौनपुर जा पहुंचा। हिमायूं को जब यह सूचना मिली तो तुरन्त कूच कर गया। गंगा के घाट पर आकर मालूम हुआ कि फरीद खां वहां से वापस आकर रास्ता रोके हुए हैं। मौका देख कर फरीद खां ने जो सुलह का प्रस्ताव पेश किया, तो हुमायूं ने उसे स्वीकार कर लिया परन्तु जब मुगल फौज गाफिल हो गई तो अचानक ऐसा शबखूं मारा कि हजारां कट गये और बड़ी मुश्किल से हिमायूं चन्द साथियों के साथ नदी किनारे पहुंचा। हिमायूं परेशान आगरा से दिल्ली होता हुआ पंजाब पहुंचा। मगर किसी भाई ने उस की मदद नहीं की और फरीद खां उस के पीछे–पीछे पंजाब तक पहुंच गया। हुमायूं निराश होकर राजपूताना (राजस्थान) के रास्ते सिन्ध पहुंचा। अमरकोट में ठहरा था कि अकबर पैदा हुआ और मुश्कनाफा जो उस की कमर में था लोगों में बांटा जिस की खुशबू हवा में उड़ते ही लोगों ने अच्छा शगुन लिया। हिमायूं सिन्ध से कन्धार पहुंचा जहां उस का भाई हाकिम था। वह अपने भाई से लड़ते भिड़ते ईरान जा पहुंचा। ईरान के बादशाह ने उसकी बडी आवभागत की। वह बहुत दिनों तक उसका मेहमान रहकर मौके की ताक में बैठा रहा।

सूरी पठानों की सल्तनत

शेरशाह सूरी : फरीद खां बिहार और बंगाल के अतिरिक्त अब जौनपुर, दिल्ली और पंजाब पर भी कब्जा करके "शेरशाह" के लकब (उपाधि) से दिल्ली का बादशाह हुआ। चन्द सालों में उस ने मालवा और राजपूताना (राजस्थान) के भी चन्द किले फतह किये आखिर कालेंजर के किले की घेराबन्दी किये हुए था कि बारूद में आग लग जाने से जो चिनगारी लगी तो शेरशाह उस से बच न सका। चुनानचि १५४५ ई० (६५२ हि०) में इधर किला फतह हुआ उधर शेरशाह का देहान्त हो गया। उस ने बंगाल से पंजाब तक बड़ी सड़क तैयार कराई और छाया के लिए दोनों तरफ पेड़ लगवाए और हर कोस पर पक्की सराय, मस्जिद और कुवां बनवाया सराय में हर कौम और धर्म के लोगों का

बादशाह की तरफ से खाना मिलता था। उसका न्याय और उसके कानून मशहूर हैं।

शेरशाह के बाद उसका लड़का सलीम शाह तख्त पर बैठा और नौसाल तक हुकूमत की। दिल्ली के पास सलीम गढ़ का किला उस की यादगार है।

१५५२ ई० (९६० हि०) में मुहम्मद शाह आदिल जिसे जनसाधारण आदिल शाह कहते थे दिल्ली का बादशाह हुआ जिस ने सुख विलास और दानशीलता में खजाना खाली कर दिया। और हेमू बक्काल को मंत्री बनाकर बड़े–बड़े सरदारों को अपना दुश्मन बना लिया। चुनानचि सबसे पहले बंगाल बागी हुआ। यहां की बगावत दूर करने जब गया तो उसका एक सम्बन्धी इब्राहीम सूरी ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया। आदिलशाह यह सुनकर पलटा और इब्राहीम से लड़ाई शुरू कर दी परन्तु पराजित होकर बिहार की तरफ भागा। उधर लाहौर के हाकिम सिकन्दर इब्राहीम से दिल्ली लेकर खुदबादशाह बन गया। हेमू बक्काल आदिल को लेकर चुनार के किले में फौज की तैयारी कर रहा था कि इब्राहीम सूरी से मुकाबला करना पड़ा जो दिल्ली से भाग कर बिहार आया था। हेमू बक्काल ने यद्यपि उस को पराजित कर दिया मगर बंगाल के बागियों के दमन के लिए जल्द ही जाना पड़ा। उन को अधीन बनाने के बाद सीधा दिल्ली की ओर रवाना हुआ जहां हुमायूं बादशाह ईरान से वापस आकर सिकन्दर सूरी से दिल्ली ले चुका था। अभी हेमु बक्काल दिल्ली न पहुंचा था कि १५५५ (९६३ हि०) में अचानक कोठे की सीढ़ी से गिर कर हिमायूं का देहान्त हो गया और दिल्ली की प्रसिद्ध इमारत मकबरा हुमायूं में दफन किया गया। उस समय अकबर पंजाब में निवास करता था।

पठानों की हुकूमत के काम : सय्यिदों ने लगभग बारह वर्ष हुकूमत की मगर उन का पूरा काल बगावतों को दबाने में बीता, अलबत्ता लोधियों की पचास वर्षीय हुकूमत में कुछ बातें बयान करने योग्य हुईं। मुल्तान से बिहार तक का भाग एक शासन के अधीन हो गया। फलस्वरूप अम्न और शान्ति स्थापित हुई और अनाज इतना सस्ता हुआ कि जनता खुशहाल हुई। हिन्दू जो अब तक कार्यालयों से दूर रहते थे फारसी की शिक्षा प्राप्त करके कार्यालयों पर काबिज हुए। शेरशाह का जमाना बेहतरीन जमाना था। उस ने ऐसे अच्छे कानून जारी किये कि अलाउद्दीन खिलजी के सिवा हिन्दुस्तान के किसी बादशाह ने अब तक नहीं किये थे। उस के बनाए हुए कानून अधिक तर मुगल सल्तनत में भी जारी रहे। जमीन की नाप और मालगुजारी (भूमिकर) के बहुत अच्छे कानून बनाए। पुलिस का उस ने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। जिस जगह कोई हत्या किया हुआ व्यक्ति पाया जाता उस के चारों ओर एक मील के लोग जिम्मेदार करार पाते। चोरी जहां होती उस गांव का पटेल या चौधरी उस का जिम्मेदार ठहराया जाता। कृषि के नियम इतने अच्छे बनाए कि जमीनदार और किसान पैदावार को बढ़ाने में प्रयत्नशील रहते। फौजी ताकत ऐसी अच्छी थी कि उस के डर से कभी किसी को बगावत का साहस न होता। न्याय का उसको इस दर्जा ख्याल था कि शाहजादे ने एक बार हाथी पर जलूस में एक हिन्दू औरत पर जब वह घर में नहा रही थी पान का बीड़ा फेंका था तो शेरशाह ने हुक्म दिया कि उसी प्रकार शाहजादे की बेगम पर उस हिन्दू औरत का पति पान का बीड़ा फेंके।

शेरशाह आलिमऔर उलमा का सम्मान करता था। उसके काल में बुद्धिजीवीय मुल्ला निजामुद्दीन, शैख खलील मुर्शिद, काजी फसीहुद्दीन, मौलाना रफीयुद्दीन सूफी (संत) शैख अब्दुल हई कवि जैसे बाकमाल लोग मोजूद थे। धार्मिक सहयोग के लिए तुर्की के सुल्तान के पास अपना दूत भेजने का भी उसका विचार था मगर मौत ने अवसर नहीं दिया। उसके काल में अनगिनत किले तैयार हुए। डाक का बड़ा अच्छा प्रबन्ध था, बिहार, मालवा और मुलतान से रोजाना उसकी डाक आती थी जिस से देश के कण–कण का हाल उस को मालूम होता। वह बहुत ही बुद्धिमान और बहादुर था। उसने कभी पराजय का मुंह नहीं देखा। (जारी)

अनुवाद : हबीबुल्लाह आजमी

लेखकगण

कृपया पन्ने के एक ओर लिखें। स्पष्ट तथा सरल लिखें। अपने लेख में सम्बोधित के सम्मान का ध्यान रखें।

पाठकगण

अगर आप को सच्चाराही के लेख अच्छे लगते हैं तो कम से कम एक गाहक बनाने की चेष्ठा करें।

अगर आपको कोई लेख अच्छा न लगे तो हम को अवश्य लिखें। – सम्पादक

संसार के नक़्शों और गुलोब की तैयारी

डॉ० एम नसीम

मुस्लिम भूगोल विशेषज्ञों ने पहली बार भौगोलिक सिद्धान्तों पर आधारित साइंटिफिक नक्शे (मानचित्र) तैयार किये। गुलोब और माडल बनाए जिससे भूगोल का पठन पाठन में आसानी पैदा हुई और नई संभावनाओं के नये–नये द्वार खुले और भूगोल को काफी उन्नति हुई। नारमन यूरोपीय बादशाह रोजर द्वितीय के लिए इदरीसी ने जो चांदी का पहला गुलोब तैयार किया था, वह काहिरा पुस्ताकलय में आज भी यादगार के रूप में सुरक्षित है। इसके अतिरिक्त गिरबर्ट पोप ऐलोरस्ट्रोम जब मुसलमानों के काइम किये हुए वैज्ञानिक केन्द्र कुरतबा में भूगोल पढ़ रहा था, जिससे यूरोप में भूगोल को काफी लोक प्रियता प्राप्त होने लगी और उस की इसी इस्लामी भूगोलिक शिक्षा के कारण ईसाई पादरियों ने उसके बारे में मशहूर कर दिया था कि "उस पर भूत सवार हो गया है। इनसाइक्लोपीडिया आफ ब्रिटेनिका के अनुसार सबसे पहले भूगोल की शिक्षा में गुलोब का प्रयोग की शुरूआत मुस्लिम भूगोल शिक्षकों ने की थी और ड्रेपर के कथनानुसार जिस जमाने में ईसाई धार्मिक मार्गदर्शक पृथ्वी के चिपटे होने पर विश्वास करते थे स्पेन के आम मुसलमान भूगोल की शिक्षा और गुलोब की सहायता से पृथ्वी के गोल होने के जानकार हो चुके थे।

मुस्लिम भूगोल वैज्ञानिकों ने ही नगरों के निर्धारण में अक्षांश और देशान्तर (अर्जुलबलद और तूलुलबलद) को निश्चित किया था जिसमें से ग्यारह नगरों का अक्षाश व देशान्तर आज भी बिल्कुल सही है। इसी प्रकार अबू सईद के द्वारा सातवीं शताब्दी हिजरी में निश्चित किया हुआ अक्षांश और देशान्तर आज भी सही साबित हो रहे हैं इसके अतिरिक्त अबुलफदः और अबुल हसन अफरीकी ने भी अपने जमाने में अक्षांश और देशान्तर को मालूम करने में मशहूर कारनामे अंजाम दिये थे। शिक्षा में मुसलमानों की उन्नति से पहले ससार में मौसिमों के बदलने के बारे में केवल अनुमान से काम लिया जाता था। मुहम्मद अलकजूनी ने यह पता लगाया कि पृथ्वी अपने परिद्ध सूर्य के चारों तरफ घूमती है जिस से मौसम बदलते हैं इस खोज ने दुनिया को अचम्भे में डाल दिया था। इसी प्रकार समुद्र में ज्वार भाटा के आ जाने के कारणों को लोग नहीं जानते थे लेकिन अबु महशर बलखी ने अपनी खोज से पहली बार यह बताया कि समुद्र में आने वाले ज्वार भाटा का सम्बन्ध चांद से होता है जो आज भी मान्य है। इसी प्रकार इन्द्र धनुष के बारे में अमेरिका और यूरोप समेत हमारे देश भारत में भी यह विचार था कि यह खुदाई कमान और हथियार है। लेकिन कुतबुद्दीन शिराजी (मृत्व १३१० ई०) और कमालुद्दीन फारसी (मृत्व १३२०) और दूसरे मुस्लिम वैज्ञानिकों ने यह पता लगाया कि सूर्य कणों के सात रंगों का अमल है। मुस्लिम भूगोल विशेषज्ञ से प्रभावित होकर एक यूरोपीय वैज्ञानिक डेड मेनिस ने जब इस बात का एलान किया कि इन्द्र धनुष हथियार नहीं बल्कि प्रकाश के कणों की प्रक्रिया है तो कलीसा के पादरी भड़क उठे और उसे धोके से रोम लाकर उसे कैद कर दिया और कैद खाने में ही उस की मौत हो गयी।

तात्पर्य यह है कि मुसलमानों ने अपने राजनीतिक, शैक्षणिक (तालीमी) और वैज्ञानिक उन्नति के जमाने में हैरत में डालने वाले कारनामे अंजाम दिये हैं कि आज के मुसलमानों के राजनीतिक, शैक्षणिक और वैज्ञानिक पिछड़ेपन को देखते हुए उस पर यकीन करना मुश्किल है लेकिन यह इतिहास का ऐसा स्पष्ट और मुंहबोला सत्य है कि तमामतर पक्षपात के बावजूद मुस्लिम दुश्मन पक्ष भी अगर खुले शब्दों में नहीं तो दबी आवाज में मानने पर मजबूर हैं क्योंकि मुस्लिम भूगोल विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों के कारनामे इतने अधिक हैं और उनकी सूची इतनी लम्बी है कि उस पर पर्दा डाल देने या उन्हें नकार देना असम्भव है। इतिहास और विज्ञान की तरह भूगोल और खगोल विद्या (इल्मे नजूम) में भी मुसलिम विशेषज्ञों और अनुसन्धान कर्ताओं ने ऐसे ऐतिहासिक और प्रमुख (नुमायां) कारनामे अंजाम दिये हैं वह भूगोल और खगोल शास्त्र में मील के पत्थर और मार्ग दर्शन की हैसियत रखते हैं क्योंकि मुसलमानों के पूर्व जो थोड़ा बहुत भूगोल का ज्ञान मौजूद था वह बिखरा हुआ अवैज्ञानिक

(शेष पृष्ठ ६ पर)

क़ुर्बानी

इदारा

अगर आप साहिबे निसाब हैं यअ्नी ६१२ ग्राम चान्दी या उस की क़ीमत के रूपयों के मालिक है तो जहां आप पर ज़कात फ़र्ज़ है, सदक़–ए–फ़ित्र वाजिब है, वहीं आप पर बकरअ़ीद में क़ुर्बानी वाजिब है। आप एक सहीह़ सालिम बकरा या बकरी ख़रीद कर १० या ११ या १२ ज़िल्हिज्जा को ज़ब्ह़ कीजिए, फिर एक तिहाई गोश्त ग़रीब भाइयों में एक तिहाई अ़ज़ीज़ों में तक़सीम कीजिए एक तिहाई में घर के लोग खाएं। खाल अगर बेची जाए तो क़ीमत ग़रीबों का ह़क़ है, ग़रीब वह है जिस के पास ६१२ ग्राम चांदी या उस की क़ीमत भर के पैसे न हो।

बड़े जानवर जैसे पड़वा, भैसा में ह़िस्सा भी ले सकते हैं। बड़े जानवर में एक से लेकर सात ह़िस्से तक हो सकते हैं, कोई बड़ा जानवर एक ही ह़िस्से में ज़ब्ह़ कर सकता है, सात ह़िस्सेदार हों तो सब बराबर ह़िस्सा लें और सब की नीयत क़ुर्बानी या अ़क़ीक़े की हो वरना किसी की क़ुर्बानी न होगी। कुछ जगहों पर एक बड़ी ग़लती चल रही है वह यह कि बड़े जानवर में ६ लोग शरीक होते हैं और सातवां ह़िस्सा अल्लाह के रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नाम कर देते हैं। इस तरह़ सब की क़ुर्बानी ख़राब हो जाती है; बेशक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के एह़सानों का बदला हम नहीं चुका सकते, अल्लाह तौफ़ीक़ दे तो अपनी क़ुर्बानी के बअ़्द आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की जानिब से क़ुर्बानी करें लेकिन साझे में न करें अकेले पूरा ह़िस्सा लें क़ुर्बानी के एक ह़िस्से में साझा नहीं दुरूस्त है। आप चाहें तो जिस आ़लिम से आप को अ़क़ीदत हो आप ख़ुद उससे दरयाफ़्त कर लें लेकिन वह आ़लिम मुफ़्ती होना चाहिए इस मसअले में बारीकी है, हर आ़लिम नहीं समझ सकता है।

क़ुर्बानी का गोश्त अगर शौक से लें तो ग़ैर मुस्लिम पड़ोसी को भी दिया जा सकता है, लेकिन क़स्साब या चिकवे को उजरत में नहीं दिया जा सकता, इसी तरह़ नाई को गोश्त बटवाई के बदले में भी नहीं दिया जा सकता, नाई क़ो बटवाई अलग से दीजिए या ख़ुद बांटिये, इसी तरह़ यह रस्म भी क़ाबिले इस्लाह़ है कि नाई जिस घर में गोश्त पहुंचाता है उस घर वाले नाई को कुछ देते हैं, इसे रोकना ज़रूरी है गोश्त बटवाने वाला नाई को हिदायत करे कि कहीं कुछ न लेना बांटने की उजरत मैं अदा करूंगा।

बअ़्ज़ जगहों पर नाई कहता है क़ुर्बानी का कल्ला (सिरा) हमारा ह़क़ है, कहीं तकियादार (फ़क़ीर) कहता है, हमारा ह़क़ है और अपना ह़क़ वसूल भी लेता है, याद रहे क़ुर्बानी में या अ़क़ीक़े में किसी का कोई ह़क़ नहीं हुआ करता, क़ुर्बानी करने वाला कल्ला ख़ुद पकाए खाए या किसी हिबा कर दे यह ह़क़ वाली रस्म ख़त्म होना चाहिए। इसी तरह़ बअ़्ज़ जगहों पर क़ुर्बानी की खाल क़स्साब अपनी उजरत में ले लेता है यह भी सरासर ग़लत है, खाल क़साई के हाथ मुनासिब क़ीमत पर बेची जा सकती है उजरत में नहीं दी जा सकती।

कादियानियत का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं

कादियानियत एक अलग धर्म है जो एक झूठ बोलने वाले मिर्जा अहमद कादियानी का बनाया हुआ है। इस का इस्लाम अर्थात शरीअ़ते मुह़म्मदी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यह बात ज़रूर है कि अगर वह अपने बनाये हुए धर्म के लिए इस्लाम का चर्बा (नमाज, रोज़ा, ज़कात आदि) न लेते तो उन के धर्म का भी वही परिणाम होता जो अकबर के दीने इलाही का हुआ, इस्लाम का चर्बा लेने से मिर्जा जी को कुछ सफलता मिली और कादियानियत का वजूद क़ाइम हो गया और वह कादियानियों के व्यापार की दौलत तथा यहूदियों की मदद से दुन्या में कुछ लाख हो गये उन्होंने सफलता प्राप्त करने के लिए इस्लामी आ़माल के चर्बे को अपनाया तो, परन्तु बाद में घोषित कर दिया कि हमारे आ़माल कुछ और ही हैं, ३ जुलाई स० १६३१ को अख़बार "अल फजल में मिर्जा बशीरूद्दीन महमूद का ख़ुत्बा छपा था, उस में मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी के ह़वाले से कहा गया है कि :

यह ग़लत है कि दूसरे लोगों से हमारा इख़्तिलाफ सिर्फ़ वफ़ाते मसीह़ और चन्द मसाइल में है, अल्लाह तआ़ला की ज़ात, रसूले करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) क़ुर्आन नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात ग़रज कि आप ने तफ़सील से बताया कि एक एक जुज़ में हमें इन से (मुसलमानों से) इख़्तिलाफ़ है। ३१ दिसम्बर १६१४ई०के अलफज्ल में है कि – ख़लीफ़–ए–अव्वल ने एलान किया था कि "उन का (मुसलमानों का) इस्लाम और है, हमारा और है।

हज्ज की ज़रूरी बातें

इदारा

आम तौर से जो लोग दूर दराज़ से हज्ज करने जाते हैं तो तमत्तुअ की नीयत कर के जाते हैं, हज्जे तमत्तुअ की ज़रूरी बातें नीचे लिखी जाती हैं।

१. मीक़ात आने से पहले या मीक़ात पर उम्रे का एहराम बांधे, हवाईजहाज़ में बहुत इहतियात की ज़रूरत है, बअ्ज़ लोग तो हवाई अड्डे ही पर एहराम बांध लेते हैं, बअ्ज़ लोग हवाई अड्डे पर चादरें बांध लेते हैं और मीक़ात आने का एअ्लान होते ही एहराम की नीयत कर लेते हैं। बहरहाल ऐसा न होने पाए कि बेख़बरी में एहराम बांधे बिना मीक़ात गुज़र जाए।

हरम में दाख़िल हो कर उम्रे का तवाफ़ करें इस में रमल (यअ्नी तीन चक्करों में ज़रा अकड़ कर मोंढे हिलाते हुए, क़रीब क़रीब क़दम रखते हुए पहलवानों की तरह जल्दी जल्दी चलना) करें, और पूरे तवाफ में इज़्तिबाअ (यअ्नी चादर दाहने कन्धे से निकाल कर बाएं कन्धे पर डालना) भी करें। फिर सई कर के सर मुंडा लें या पूरे सर के बाल कतरवा लें।

आठवीं ज़िल्हिज्जा को हज्ज का एहराम बांधें, मिना जाएं, नौ को अरफ़ात में वक़ूफ़ करना फ़र्ज़ है इस के बिना हज न होगा, मुज़्दल्फ़ा का वक़ूफ़ दस तारीख़ को बड़े शैतान को कंकरियां मारना फिर क़ुर्बानी करना, फिर सर मुडाना यह सारे काम वाजिब हैं, तवाफ़े ज़ियारत फ़र्ज़ हैं, दस से बारह तक जिस रोज़ मौक़अ हो कर लें इस तवाफ़ में रमल है और अगर एहराम नहीं उतारा है तो इज़्तिबाअ भी है। तवाफ़े ज़ियारत के बअ्द सअ्ी वाजिब है, ग्यारह बारह को तीनों शैतानों को कंकरियां मारना यअ्नी रमी वाजिब है। विदाअ्ी तवाफ़ भी वाजिब है तमत्तुअ हज की ज़रूरी बातें बयान हुईं।

दूर से जाने वाले आम तौर से हज्जे इफ़्राद या क़िरान नहीं करते फिर भी इन दोनों हज्जों की ज़रूरी बातें लिखी जाती हैं।

हज्जे इफ़्राद

एहराम के बिना तो हज्ज होता ही नहीं, चाहे जो हज्ज हो पस एहराम तो शर्त है, हरम शरीफ़ पहुंच कर तवाफ़े क़ुदूम सुन्नत है, इस तवाफ के बअ्द सअ्ी का इरादा हो तो तवाफ़ में इज़्तिबाअ और रमल भी करें, इस तवाफ़ के बअ्द सअ्ी नहीं है अगर कर लेंगे तो यह हज्ज की सअ्ी में शुमार हो जाएगी। हज्जे इफ़्राद में भी वक़ूफ़े अरफ़ा फ़र्ज़ और वक़ूफ़े मुज़्दल्फ़ा वाजिब है, दस तारीख़ को बड़े शैतान की कंकरी मारना फिर सर मुंडाना वाजिब है, क़ुर्बानी इख़्तियारी है। तवाफ़े ज़ियारत फ़र्ज़ है, सअ्ी अगरतवाफ़े क़ुदूम में कर ली तो अब नहीं करना है अगर नहीं की है तो वाजिब है, ११,१२ को तीनों शैतानों को कंकरी मारना वाजिब है, आख़िर में तवाफ़े विदाअ वाजिब है। इस हज्ज में १० तारीख़ को बड़े शैतान को कंकरी मारने से पहले एहराम नहीं उतरता।

हज्जे क़िरान में पहले उम्रा करें गे (हज्जे तमत्तुअ में इस का बयान आ चुका) लेकिन सअ्ी के बअ्द न सर मुंडाएंगे न एहराम उतारेंगे, तवाफ़े क़ुदूम करेंगे बाक़ी हज्ज जैसा तमत्तुअ में बयान हुआ पूरा करेंगे सअ्ी अगर तवाफ़े क़ुदूम में कर ली है तो तवाफ़े ज़ियारत के बअ्द न करेंगे वरना सअ्ी भी करनी ज़रूरी है। (अल्लाह तआ़ला सभी हाजियों का हज आसान फ़रमाए)

मुनाजात

रख दूर दुन्याए दनी मिन कुल्लि दाअ़िन आ़फ़िनी
आराम से हो जां कनी वक़्ते नज़अ़ मेरी, ग़नी
कर ख़ातिमा ईमान पर ईमान हो क़ुर्आन पर
महशर में हो मेरा गुज़र हो सामना तेरा अगर
अज़ वास्ते ख़ैरूलबशर नज़रे करम अअ्माल पर
कर मग़फ़िरत मेरी ग़फ़ूर जो हों गुनह कर चूर चूर
दन्या में है मुझ पर शफ़ीक़ हर दम है तू मेरा रफ़ीक़
तुरबत में भी तू बन शफ़ीक़ हर दम है तू मेरा रफ़ीक़
तुरबत में भी तू बन शफ़ीक़ रहमत में कर मुझ को ग़रीक़
मोनिस रहे वहदत में तू कर रौशनी ज़ुल्मत में तू

औरतों के लिए पर्दा

डॉ० जाकिर नाइक

प्रश्न : इस्लाम औरतों को पर्दे में रखकर उनका अपमान क्यों करता है?

उत्तर : इस्लाम में औरतों की जो स्थिति है, उस पर सेक्यूलर मीडिया का जबरदस्त हमला होता है। वे पर्दे और इस्लामी लिबास को इस्लामी कानून में स्त्रियों की दासता की मिसाल के रूप में पेश करते हैं। इससे पहले कि हम पर्दे के धार्मिक निर्देश के पीछे मौजूद कारणों पर विचार करें, इस्लाम से पूर्व समाज में स्त्रियों की स्थिति का अध्ययन करते हैं।

१. भूतकाल में स्त्रियों का अपमान किया जाता था और उनका प्रयोग केवल काम वासना के लिए किया जाता था

इतिहास से लिए निम्न उदाहरण इस तथ्य की पूर्ण रूप से व्याख्या करते हैं कि आदिकाल की सभ्यता में औरतों का स्थान इस सीमा तक गिरा हुआ था कि उनको प्राथमिक मानव सम्मान तक नहीं दिया जाता था।

(क) बेबिलोनिया सभ्यता

औरतें अपमानित की जातीं और बेबिलोनिया के कानून में उनको हर हक और अधिकार से वंचित रखा जाता था। यदि एक व्यक्ति किसी औरत की हत्या कर देता तो उसको दंड देने के बजाय उसकी पत्नी को मौत के घाट उतार दिया जाता था।

(ख) यूनानी सभ्यता

इस सभ्यता को प्राचीन सभ्यताओं में अत्यन्त श्रेष्ठ माना जाता है। इस अत्यन्त श्रेष्ठ व्यवस्था के अनुसार औरतों को सभी अधिकारों से वंचित रखा जाता था और वे नीच वस्तु के रूप में देखी जाती थीं। यूनानी देवगाथा में "पांडोरा" नाम की एक काल्पनिक स्त्री पूरी मानव जाति के दुखों की जड़ मानी जाती है। यूनानी लोग स्त्रियों को पुरूषों के मुकाबले में तुच्छ जाति मानते थे। यद्यपि उनकी पवित्रता अमूल्य थी और उनका सम्मान किया जाता था, परन्तु बाद में यूनानी लोग अहंकार और काम वासना में लिप्त हो गए। वैश्यावृत्ति यूनानी समाज के हर वर्ग में एक आम रिवाज बन गई।

(ग) रोमन सभ्यता

जब रोमन सभ्यता अपने गौरव की चरमसीमा पर थी, उस समय एक पुरुष को अपनी पत्नी का जीवन छीनने का भी अधिकार था। वैश्यावृत्ति और नग्नता रोमवासियों में आम थी।

(घ) मिस्री सभ्यता

मिस्री लोग स्त्रियों को शैतान का रूप मानते थे।

(ड.) इस्लाम से पहले का अरब

इस्लाम से पहले अरब में औरतों को नीच माना जाता और जब कभी किसी लड़की का जन्म होता तो आमतौर से उसे जीवित दफन कर दिया जाता था।

२. इस्लाम ने औरतों को ऊपर उठाया और उनको बराबरी का दर्जा दिया और वह उनसे अपेक्षा करता है कि वे अपना स्तर बनाए रखें

इस्लाम ने औरतों को ऊपर उठाया और लगभग १४०० साल पहले ही उनके अधिकार उनको दे दिए और वह उनसे अपेक्षा करता है कि वे अपने स्तर को बनाए रखेंगी।

पुरुषों के लिए पर्दा

आमतौर पर लोग यह समझते हैं कि पर्दे का सम्बन्ध केवल स्त्रियों से है।

हालांकि पवित्र कुर्आन में अल्लाह ने औरतों से पहले मर्दों के पर्दे का वर्णन किया है –

ईमानवालों से कह दो कि वे अपनी नजरें नीची रखें और अपनी पाकदामनी की सुरक्षा करें। यह उनको अधिक पवित्र बनाएगा और अल्लाह खूब परिचित है हर उस कार्य से जो वे करते हैं। (कुर्आन, २४:३०)

उस क्षण जब एक व्यक्ति की नजर किसी स्त्री पर पड़े तो उसे चाहिए कि वह अपनी नजर नीची कर ले।

स्त्रियों के लिए पर्दा

कुरआन की सूरा नूर में कहा गया है–

"और अल्लाह पर ईमान रखने वालों से कह दो कि वे अपनी नजरें नीची रखें और अपनी पाकदामनी की सुरक्षा करें और वे अपने बनाव–श्रृंगार और आभूषणों को न दिखाएं, इसमें कोई आपत्ति नहीं जो सामान्य रूप से

नजर आता है और उन्हें चाहिए कि वे अपने सीनों पर ओढ़िनियां ओढ़ लें और अपने पतियों, बापों, अपने बेटों के अतिरिक्त किसी के सामने अपने बनाव श्रृंगार प्रकट न करें।'' (कुर्आन २४:३१)

३. पर्दे के लिए आवश्यक शर्तें

पवित्र कुर्आन और हदीस (पैगम्बर के कथन) के अनुसार पर्दे के लिए निम्नलिखित छह बातों का ध्यान देना आवश्यक है –

(१) पहला शरीर का पर्दा है जिसे ढका जाना चाहिए। यह पुरुष और स्त्री के लिए भिन्न है। पुरुष के लिए नाफ (नाभि) से लेकर घुटनों तक ढकना आवश्यक है और स्त्री के लिए चेहरे और हाथों की कलाई को छोड़कर पूरे शरीर को ढकना आवश्यक है। यद्यपि वे चाहें तो खुले हिस्से को भी छिपा सकती हैं। इस्लाम के कुछ आलिम इस बात पर जोर देते हैं कि चेहरा और हाथ भी पर्दे का आवश्यक हिस्सा है।

अन्य बातें ऐसी हैं जो स्त्री एवं पुरुष के लिए समान हैं।

(२) धारण किया गया वस्त्र ढीला हो और यह शरीर के अंगों को प्रकट न करे।

(३) धारण किया गया वस्त्र पारदर्शी न हो कि कोई शरीर के भीतरी हिस्से को देख सके।

(४) पहना हुआ वस्त्र भड़कीला न हो कि विपरीत लिंग को आकर्षित करे।

(५) पहना हुआ वस्त्र विपरीत लिंग से न मिलता हो।

(६) धारण किया गया वस्त्र ऐसा नहीं होना चाहिए जो किसी विशेष गैर–मुस्लिम धर्म को चिंहित करता हो और उस धर्म का प्रतीक हो।

४. पर्दा दूसरी चीजों के साथ–साथ इंसान के व्यवहार और आचरण का भी पता देता है

पूर्ण पर्दा, वस्त्र (लिबास) की छह कसौटियों के अलावा नैतिक व्यवहार और आचरण को भी अपने भीतर समोए हुए है। कोई व्यक्ति यदि केवल वस्त्र की कसौटियों को अपनाता है तो वह पर्दे के सीमित अर्थ का पालन कर रहा है। वस्त्र के द्वारा पर्दे के साथ–साथ आंखों और विचारों का भी पर्दा करना चाहिए। किसी व्यक्ति के चाल–चलन, बातचीत एवं व्यवहार को भी पर्दे के दायरे में लिया जाता है।

५. पर्दा दुर्व्यवहार से रोकता है

पर्दे का औरतों को क्यों उपदेश दिया जाता है इसके कारण का पवित्र कुरआन की सूरा अल अहजाब में उल्लेख किया गया है –

''ऐ नबी ! अपनी पत्नियों, पुत्रियों और ईमानवालियों से कह दो कि वे (जब बाहर जाएं) तो ऊपरी वस्त्र से स्वयं को ढांक लें। यह अत्यन्त आसान है कि वे इसी प्रकार जानी जाएं और दुर्व्यवहार से सुरक्षित रहें और अल्लाह तो बड़ा क्षमाकारी और बड़ा ही दयालु है।'' (कुरआन, ३३:५६)

पवित्र कुरआन कहता है कि औरतों को पर्दे का इस लिए उपदेश दिया गया है कि वे पाकदामनी के रूप में देखी जाएं और पर्दो उनसे दुर्व्यवहार को भी रोकता है।

६. जुड़वां बहनों का उदाहरण

मान लीजिए कि समान रूप से सुन्दर दो जुड़वां बहनें सड़क पर चल रही हैं। एक केवल कलाई और चेहरे को छोड़कर पर्दे में पूरी तरह ढकी हो और दूसरी पश्चिमी वस्त्र मिनी स्कट (छोटा लंहगा) और ब्लाउज पहने हुए हो। एक लफंगा किसी लड़की को छेड़ने के लिए किनारे खड़ा हो तो ऐसी स्थिति में वह किससे छेड़–छाड़ करेगा। उस लड़की से जो पर्दे में है या जो मिनी स्कर्ट पहने है। स्वाभाविक रूप से वह दूसरी लड़की से दुर्व्यवहार करेगा।

ऐसे वस्त्र विपरीत लिंग को अप्रत्यक्ष रूप से छेड़–छाड़ और दुर्व्यवहार का निमंत्रण देते हैं। कुरआन बिलकुल सही कहता है कि पर्दा औरतों के साथ छेड़छाड़ और उत्पीड़न को रोकता है।

७. बलात्कारियों के लिए मौत की सजा

इस्लामी कानून में बलात्कार की सजा मौत है। बहुत से लोग इसे निर्दयता कहकर इस दंड पर आश्चर्य प्रकट करते हैं। कुछ का तो कहना है कि इस्लाम एक जंगली धर्म है। मैंने एक सरल–सा प्रश्न और गैर–मुस्लिमों से किया कि ईश्वर न करे कि कोई आपकी मां अथवा बहन के साथ बलात्कार करता है और आप को न्यायाधीश बना दिया जाए और बलात्कारी को आपके सामने लाया जाए तो उस दोषी को आप कौन–सी सजा सुनाएंगे? मुझे प्रत्येक से एक ही उत्तर मिला कि मृत्यु–दण्ड दिया जाएगा। कुछ ने कहा कि वे उसे वे कष्ट दे–देकर मारने की सजा सुनाएंगे। मेरा अगला प्रश्न था कि यदि कोई आपकी मां, पत्नी अथवा बहन के साथ बलात्कार करता है तो आप उसे मृत्यु दंड देना चाहते हैं परन्तु यही घटना किसी दूसरे की मां, पत्नी अथवा बहन के साथ

होती है तो आप कहते हैं कि मृत्यु–दंड देना जंगलीपन है। इस स्थिति में यह दोहरा मापदंड क्यों है?

८. पश्चिमी समाज औरतों को ऊपर उठाने का झूठा दावा करता है

औरतों की आजादी का पश्चिमी दावा एक ढोंग है, जिसके सहारे वे उनके शरीर का शोषण करते हैं, उनकी आत्मा को गंदा करते हैं और उनके मान–सम्मान से उनको वंचित रखते हैं। पश्चिमी समाज दावा करता है कि उसने औरतों को ऊपर उठाया। इसके विपरीत उन्होंने उनके रखैल और समाज की तितलियों का स्थान दिया है, जो केवल जिस्मफ़रोशों और काम–इच्छुकों के हाथों का एक खिलौना हैं, जो कला और संस्कृति के रंग बिरंगे पर्दे के पीछे छिपे हुए हैं।

९. अमेरिका में बलात्कार की दर सबसे अधिक है

अमेरिका को दुनिया का सबसे उन्नत देश समझा जाता है। १९६० ई० की एफबीआई रिपोर्ट से पता चलता है कि अमेरिका में उस साल १,०२५५५ बलात्कार की घटनाएं दर्ज की गईं। रिपोर्ट में यह बात भी बताई गई है कि इस तरह की कुल घटनाओं में से केवल १६ प्रतिशत ही प्रकाश में आ सकी हैं। इस प्रकार १९६० ई० में बलात्कार की घटना का सही अंदाजा लगाने के लिए उपरोक्त संख्या को ६.२५ से गुना करके जो योग साने आता है वह ६,४०,९६८ है। अगर इस पूरी संख्या को साल के ३६५ दिनों में बांटा जाए तो प्रतिदिन के लिहाज से १७५६ की संख्या सामने आती है।

इस दूसरी रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में प्रतिदिन १९०० बलात्कार की घटनाएं पेश आती हैं। नेशनल कराइम विक्टिमाइजेशन सर्वे ब्यूरो आफ जस्टिस स्टैटिस्टिक्स के अनुसार केवल १९९६ में ३,०७,००० घटनाएं दर्ज हुईं। लेकिन सही घटनाओं की केवल ३१ प्रतिशत घटना ही दर्ज हुईं। इस प्रकार ३,०७००० ग ३,२२६ – ९,९०,३२२ बलात्कार की घटनाएं सन् १९९६ ई. में दर्ज हुईं। प्रतिदिन के लिहाज से औसत २७१३ बलात्कार की घटनाएं १९९६ ई० में अमेरिका में हुईं। जरा विचार करें कि अमेरिका में हर ३२ सेकेंड में एक ब्लात्कार होता है। ऐसा लगता है कि अमेरिकी बलात्कारी बड़े ही निडर हैं। एफबीआई की १९९० की रिपोर्ट आगे बताती है कि बलात्कार की घटनाओं में केवल १० प्रतिशत बलात्कारी ही गिरफतार किए जा सके हैं। जो कुल संख्या १.६ प्रतिशत है। बलात्कारियों में से ५० प्रतिशत लोगों का मुकद्मा से पहले रिहा कर दिया गया। इसका मतलब यह हुआ कि केवल ०.८ प्रतिशत बलात्कारियों के विरुद्ध मुकद्दमा चलाया जा सका। दूसरे शब्दों में अगर एक व्यक्ति १२५ बार बलात्कार की घटनाओं में लिप्त हो तो केवल एक बार ही उसे सजा दी जाने की संभावना है। बहुत से लोग इसे एक अच्छा जुआ समझेंगे। रिपोर्ट से यह भी अंदाजा होता है कि सजा दिए जाने वालों में से केवल ५० प्रतिशत लोगों को एक साल से कम की सजा दी गई है। हालांकि अमेरिकी कानून के अनुसार सात साल की सजा होनी चाहिए। उन लोगों के सम्बन्ध में जो पहली बार बलात्कार के दोषी पाए गए हैं, जज नर्म पड़ जाते हैं। जरा विचार करें कि एक व्यक्ति १२५ बार बलात्कार करता है केवल उसके विरुद्ध मुकद्दमा किए जाने का अवसर केवल एक बार ही आता है और फिर ५० प्रतिशत लोगों को जज की नर्मी का लाभ मिल जाता है और एक साल से भी कम मुद्दत की सजा किसी ऐसे बलात्कारी को मिल पाती है जिस पर यह अपराध सिद्ध हो चुका है।

उस दृश्य की कल्पना कीजिए कि अगर अमेरिका में पर्दे का पालन किया जाता। जब कभी कोई व्यक्ति एक स्त्री पर नजर डालता और कोई अशुद्ध विचार उसके मस्तिष्क में उभरता तो वह अपनी नजर नीची कर लेता। प्रत्येक स्त्री पर्दा करती अर्थात पूरे शरीर को ढक लेती सिवाय कलाई और चेहरे के। इसके बाद यदि कोई उसके साथ बलात्कार करता तो उसे मृत्यु–दंड दिया जाता। मैं आप से पूछता हूं कि ऐसी स्थिति में क्या अमेरिका में बलात्कार की दर बढ़ती या स्थिर रहती या कम होती?

१०. इस्लामी कानून निश्चित रूप से बलात्कार की दर घटाएगा

स्वाभाविक रूप से ज्यों ही इस्लामी कानून लागू किया जाएगा तो इसका परिणाम निश्चित रूप से सकारात्मक होगा। यदि इस्लामी कानून संसार के किसी भी हिस्से में लागू कया जाए, चाहे अमेरिका हो या यूरोप, समाज में शान्ति आएगी। पर्दा औरतों का अपमान नहीं करता बल्कि उन्हें ऊपर उठाता है और उनकी पवित्रता और मान की रक्षा करता है।

बच्चों और बच्चियों को ऐसे कपड़े न पहनाओ कि कोई जवान उन पर बुरी नज़र डाले।

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : हमारे यहां बच्चियों की बोर्डिंग वाला मदरसा है, लगभग सौ बच्चियां रह रही हैं, उनकी इन्फ़िरादरी (अकेले अकेले) नमाज़ में निग्रां के लिए दुश्वारियां थीं, हल की तलाश हुई हज़रत मौलाना अ़ब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी लखनवी की इल्मुल फ़िक्ह जिल्द दो पेज १०२ पर लिखा मिला –

सही यह है कि सिर्फ़ औरतों की जमाअ़त मक्रूह नहीं बल्कि जाइज़ है।

अगर जमाअ़त सिर्फ़ औरतों की हो यअ़नी इमाम भी औरत हो तो इमाम को मुक्तदियों के बीच में खड़ा होना चाहिए आगे न खड़ा होना चाहिए ख़्वाह एक मुक्तदी हो या एक से ज़ाइद।

फिर हाशिये में लिखा :

हमारे फ़ुक़हा सिर्फ़ औरतों की जमाअ़त को मकरूह तहरीमी लिखते हैं, मगर चूंकि अहादीस में मज़्कूर है कि हज़रत आइशा औरतों की इमामत करती थीं और उम्मे वरक़: को हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इमामत की इजाज़त दी थी इस लिये मकरूह तहरीमी कहना बिल्कुल ख़िलाफ़े तह्क़ीक़ है। इमाम मुहम्मद ने किताबुलआसार में लिखा है कि हम को अच्छा नहीं मअ़लूम होता कि औरत इमामत करे, इस इबारत से यह निकलता है कि हनफ़ीया के नज़दीक मुस्तहब नहीं है न कि मकरूह है, मअ़लूम नहीं हमारे फ़ुक़हा ने कराहत कहां से साबित की। (इल्मुल फ़िक्ह जिल्द २ पेज १०२)

यह इबारत पढ़ कर निग्रां औरतों ने औरतों की जमाअ़त एक ऐसे हाल में शुरूअ़ करा दी जहां से बाहर आवाज़ नहीं आती लेकिन कुछ लोगों को सिर्फ़ औरतों की जमाअ़त पर एअ़तिराज है, ऐसी सूरत में शरअ़ी हुक्म से आगाह फ़रमाइये।

उत्तर : अहनाफ़ के नज़दीक औरतों की इमामत मकरूह है। मौलाना अ़ब्दुश्शकूर साहिब के क़ौल पर फ़तवा नहीं है। (फ़क़त मुफ़्ती) मुहम्मद ज़हूर नदवी

प्रश्न : निकाह के लिए क्या कुछ तारीखें सअ़द (शुभ) नहस (अशुभ) भी होती हैं।

उत्तर : इस्लाम में किसी तारीख़ को नहस (अशुभ) नहीं कहा गया है, हर दिन और हर तारीख़ में निकाह हो सकता है। अल्बत्ता एक बेइहतियाती चल रही है उसे लिखा जा रहा है और उस का लिहाज़ ज़रूर करना चाहिए। अगर बालिग़ लड़की का निकाह हो और निकाह के बअ़द उसी रोज़ रूख़सती हो तो औरतों से मअ़लूम कर के तारीख़ रखना चाहिए औरतें लड़की से मअ़लूमात लेकर तारीख़ बताएं। पहली रूख़सती में इसका लिहाज़ बहुत ही ज़रूरी है कि लड़की अय्याम से न हो, ताकि " वला लक़्रबूहुन्न हत्ता यत़हुर्न" की ख़िलाफ़ वरज़ी (विरोध) न हो।

प्रश्न : निकाह के पहले बालिग लड़की से इजाज़त लेने जाते हैं, उन में एक वकील कहलाता है और दो गवाह होते हैं, निकाह नामे में जो दो गवाह होते हैं क्या निकाह नामे में वही गवाह होने चाहिएं या बदले जा सकते हैं?

उत्तर : बालिग़ लड़की से निकाह की इजाज़त लेने में बड़ी बे एह़तियातियां हो रही हैं तवज्जुह चाहिए।

निकाह के रोज़ वह लड़की औरतों के बीच में बैठी होती है, आबाई घर छूटने और नये घर जाने फिर औरतों के घेरे और उनकी गुफ़्तगू से ऐसी मुतअस्सिर होती है कि इजाज़त देने की पोज़ीशन में नहीं होती कुंवारी हो या मुतल्लक़ा, इसी लिए बअ़ज़ उलमा उस के रो देने को इजाज़त समझते हैं।

यह इजाज़त की कार रवाई अगर दो एक रोज़ पहले हो जाए तो बेहतर रहे।

चाहिए कि ——— लड़की का शरअ़ी वली ख़ुद इजाज़त ले। या वह किसी ऐसे शख़्स को इजाज़त लेने के लिए मुक़र्रर करे जो लड़की का महरम हो यह एह़तियात की बात है वैसे जो भी इजाज़त लोग इजाज़त हो जाएगी।

निकाह नामे में लड़की से इजाज़त लेने के मौक़िअ़ के गवाहों का लिखा जाना ज़रूरी नहीं निकाह के गवाह दूसरे भी हो सकते हैं लेकिन इजाज़त वाले गवाह निकाह के भी गवाह रहें तो बेहतर है। ख़ुदा न करे निज़ाअ़ की सूरत में दोनों की गवाही देंगे।

मसअला यहां वकील का है, वकील वह है जो गवाहों की मौजूदगी में लड़की से पूछता है कि क्या मैं तुम्हारा निकाह फुलां बिन फुलां से इतने महर पर पढ़ा दूं? इजाज़त है? पस वकील को चाहिए कि वह ख़ुद निकाह पढ़ाए। अगर दूसरे

से पढ़वाना था तो इजाजत के वक्त कहता की पढ़वा दूं। फिर जिस से पढ़वाना हो यह वकील उस से कहे कि मैं आप को वकील बनाता हूं कि आप फुलां बिन्त फुलां का निकाह इतने महर पर फुलां बिन फुलां से पढ़ा दीजिए।

जो क़ाज़ी साहिब या मौलाना साहिब ईजाब व क़बूल कराएं या वह ख़ुद लड़की से इजाज़त लें या लड़की का शरअी वली या वकील उन को इजाज़त दे यअ्नी वकील बनाए।

आमतौर से काज़ी साहिब इजाजत लेने वाले से पूछते हैं कि तुम वकील हो फिर दोनों गवाहों से पूछते हैं कि जिस बात के यह वकील हैं उस के तुम गवाह हो? बस निकाह पढ़ा देते हैं यह नहीं पूछते कि तुम वकील हो मुझे निकाह पढ़ाने की इजाज़त देते हो? वह तो कहिये ईजाब व क़बूल के बअद लड़की अपने को शौहर के हवाले कर देती है कोई एअतिराज़ नही करती। इस तरह निकाह सहीह हो जाता है वरना अगर एअतिराज़ कर दे तो क़ाज़ी साहिब मुश्किल में पड़ जाए और दूल्हा मिया भी।

प्रश्न : अगर कोई शख्स जान बूझ कर नमाज़ मे फ़ाइज़ून की जगह मुफ़्लिहून" पढ़े तो उसकी नमाज़ होगी या नहीं?

उत्तर : जान बूझ कर ऐसा करने वाले की नमाज़ न होगी इस लिये कि जान बूझ कर यह अ़मल तहरीफ़ (क़ुर्आन में अदल बदल) का है। हां अगर भूल से "फ़ाइज़ून" की जगह "मुफ़लिहून" पढ़ दें तो चूंकि दोनों लफ़्ज़ एक मअ़ना में हैं इस लिए नमाज़ हो जाएगी।

प्रश्न : औरतों का अगर्चि जमाअत से नमाज़ पढ़ना मकूह है लेकिन अगर पढ़ें तो अज़ान व इक़ामत कहेंगी या नहीं ?

उत्तर : औरतें अगर कराहत के साथ जमाअत से नमाज़ अदा करती हैं तो न अज़ान कहेंगी न इक़ामत।

प्रश्न : मर्दों को किन किन धातों की अगूठी पहनना दुरुस्त है?

उत्तर : मर्दों को सिर्फ़ चान्दी की अगूठी पहनना दुरुस्त है दूसरी धातु की अंगूठी पहनना मक्रूह है।

प्रश्न : क्या वित्र की नमाज़ बैठ कर पढ़ सकते हैं?

उत्तर : किसी उज़्र या मजबूरी के बिना वित्र की नमाज़ बैठ कर पढ़ना जाइज़ नहीं, वित्र की नमाज़ अदा न

(पृष्ठ २४ का शेष)

परिस्थिति बड़ी ही कष्ट दायक तथा उत्साह भंजक है। देश के किसी शुद्ध सुधार तथा परिवर्तन के लिए तैयार नहीं दिखता अधिकता या तो भौतिकवाद तथा पाश्चात्य सभ्यता का या एहयायी जेहनीयत (हिन्दुत्व) का शिकार है। वह या तो आखें बन्द करके पश्चिमी सभ्यता के पीछे भाग रही है या प्राचीन सभ्यता को लौटाने की एड़ी चोटी का जोर लगा रही है, वह खुद भी इस बाढ़ पर भेंट चढ़ने को तैयार है और हमें भी उस में बहा ले जाना चाहती है। इधर उम्मते मुस्लिमा का हाल यह है कि उस में नज्म व इत्तिहाद नहीं वह जुज्वी व फुरूअी इख्तिलाफात में उलझी हुई है। उस के वसाइल व जराये महदूद, हिम्मत व जुरअत मफ्कूद हौसले इन्तिहाई पस्त हैं। ऐसी सूरत में किसी हमागीर इन्किलाब की दअवत देना मजजूब की बड़ समझा जाएगा लेकिन जब सैलाब में हम घिर गये हैं उसके साथ बहने में मिल्लत का वजूद नमक की तरह तहलील और मुल्क का अख्लाक पूरी तरह तबाह हुआ जाता है फिर इस के सिवा चारा क्या है कि मुल्क व मिल्लत और आइन्दा नस्लों को तबाही से बचाने के लिए बहादुरों की तरह उठ खडे हों और सैलाब का रूख माड़ने की पूरी जिद्द व जुहद करें इसी में हमारी जीत है।

अलहम्दु लिल्लाह नदवतुल उलमा ने इस को अट्ठारवी सदी के अखीर ही में भाप लिया था और उस ने इस सिलसिले में बड़ी काम्याबी हासिल की और वह मुसलसल इस कोशिश में लगा हुआ है और हर साल मुल्क को सैकड़ों मुहज्जब शहरी मुहय्या करता है। (अनुवाद)

●●●●●

अच्छा मशवरा

यह मशवरा तो अच्छा है कि दीनी मकतबों में दुन्यावी ज़रूरतों का इल्म हिसाब और मुआशरती उलूम पढ़ाए जाएं तथा आलिम लोग भी प्रारंभिक साइंस से परिचित हों, अंग्रेजी, हिन्दी भाषाएं सीखें अर्थ–शास्त्र तथा राजनीति से अवगत हों परन्तु यह मशवरा ग़लत है कि हर आलिम वैज्ञानिक, डाक्टर और इंजीनियर भी बने।

लैप टाप मर्दों को बांझ कर सकता है

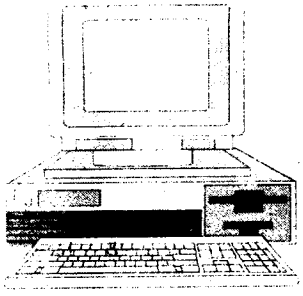

अमरीकी साइंसदानों ने सचेते किया है कि लैपटाप या गोद में रखे जाने वाले कम्प्यूटर मर्दों में बच्चे पैदा करने की योग्यता को प्रभावित कर सकते हैं। ह्यूमन रिप्रोडक्शन नामी समाचार पत्र मे छापे गये एक अध्ययन में कहा गया है कि लम्बे समय तक रानों पर लेपटाप रख कर काम करने से फोतों का तापमान बढ़ जाता है जिसके प्रमाणस्वरूप बच्चे पैदा करने वाले किटाणु या वीर्य की कमी हो जाती है। दी स्टेट यूनीवर्सिटी आफ न्यू यार्क में साइंसदानों ने पता चलाया है कि यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन एक घण्टे तक अपनी रानों पर रख कर काम करे तो उसके फोतों का तापमान लगभग तीन डिग्री बढ़ जाता है।

दि स्टेट यूनीवर्सिटी आफ न्यूयार्क की रिसर्च टीम के उच्च सदस्य डाक्टर ईफन शेंकन का कहना है कि जिस्म को नार्मल वीर्य की पैदावार के लिए एक उचित टेस्टेकूलर तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कभी हम यह नहीं कह सकते कि कितना तापमान किस वेग से और कितनी देर में वीर्य पैदा करने वाले कार्य पर प्रभाव डाल सकता है।

इससे पहले की रिसर्च से ज्ञात हुआ कि फोतों के तापमान में एक डिग्री की वृद्धि से वीर्य की पैदावार में चालीस प्रतिशत कमी हो सकती है। ब्रटिश फर्टीलाइजर सोसाइटी के डाक्टर एलन पेसी का कहना है कि यह कितनी चिन्ता की बात है कि सिर्फ आधे घण्टे लैपटाप को अपनी रान पर रखने से किस सीमा तक फोते प्रभावित होते हैं, जो मर्द प्रतिदिन लैप टाप प्रयोग में लाते हैं उन को सतर्क रहना चाहिए। (राष्ट्रीय उर्दू सहारा से ग्रहीत)

डाक्टर अम्बरीन का कहना है कि टेस्टीकूलर की खराबी सूगरकी बीमारी, जिगर की खराबी और टीबी जैसी बीमारी भी हो सकती है। जो लोग ऐसी फैक्ट्रीयों में काम करते हैं जहां पारा और सीसा प्रयोग होता है उन के टेस्टीकूलर में भी खराबी आ जाती है, उन लोगों में भी यह खराबी पाई जाती है जो खेतों में कीड़े मार जहरों का छिड़काव करते हैं, उनमें भी जो वरजिश (व्यायाम) इस्ट्राइडस प्रयोग करते हैं और एन्टी डीप्रेसेन्ट का अधिक प्रयोग करते हैं।

बांझपन

डाक्टर आइशा का कहना है कि अगर औरत मर्द के मिलाप से बारह मास तक औरत गर्भित नहीं होती तो इस दशा में बांझपन समझा जाएगा, दुन्या भर में हर छ में से एक जोड़े को यह शिकायत होती है। जिस का उपचार करना आवश्यक होता है, कुछ अफ्रीकी देशों में तो बांझपन की दर ३२ प्रतिशत तक है। यह बांझपन औरत में भी हो सकता है और मर्द में भी। समाज में मर्द इस खराबी को बताने में हिचकिचाते और शर्माते हैं और इसे छुपा रखना पसन्द करते हैं। उन का कहना था कि अधिकतर मर्दाना बांझपन का उपचार हो जाता है फिर भी इस विषय में सचेत करने की आवश्यकता है। डाक्टर आइशा का कहना है कि जिन जोड़ों पर उन्हें रिसर्च किया उन में मर्दों का ख्याल था कि बांझपन सिर्फ औरतों में होता है, जब उन को ज्ञात हुआ कि बांझपन उन ही में है तो वह हैरान रह गये। अतः जिन लोगों के यहां सन्तान न पैदा होती हो वह मियां बीवी दोनों अपनी जांच करवाएं और जिस में खराबी पाई जाए उस का उपचार हो।

ठीक कैसे है ?

डॉ. स्वर्ण किरण

बिना मतलब दूसरों पर कीचड़ उछालना
ठीक कैसे है?
हंसी–हंसी में सांप के बिल में हाथ डालना
ठीक कैसे है?
भेद–भाव पैदा करते रहना क्या
समय का तकाजा है,
गिरे हुए लोगों को नहीं संभालना
ठीक कैसे है?
नासमझी की सीमा का निर्धारण
आसान नहीं,
रोग को बराबर आगे के लिए टालना
ठीक कैसे है?
आतंकवादी दहशत के शिकार कौन बनते
कौन नहीं बनते,
अपने ही सांचे में हरदम ढालना
ठीक कैसे है?
कट्टरता की सीख
कौन मजहब देता है,
गड़े मुर्दे को उखाड़ना
ठीक कैसे है ?

शिक्षण तथा प्रशिक्षण (तअ़लीम व तर्बियत)

अफजल हुसैन एम०ए०एल०टी०

शादी के पश्चात हर जोड़े की यही आकांक्षा होती है कि जल्द उसकी गोद हरी हो। देर होती है तो सौ जतन करता है। रोता गिड़गिड़ाता है, दुआएं मांगता है, मन्नतें मानता है, और न जाने क्या क्या करता है, खुदा खुदा कर के इच्छा पूरी होती है, संतान पैदा होती है, दिल की कली खिलती है और मांगी मुराद पूरी होती है। खुशियां मनाई जाती हैं, उपहार प्रस्तुत किये जाते हैं, बच्चे की प्यारी सूरत और कामनी सी मूरत सब की आंखों को ठंडक पहुंचाती है। मां बाप अपने जिगर गोशे को फलता फूलता देख कर बाग बाग हो जाते हैं, शायद उनके लिए इस से बढ़ कर कोई खुशी नहीं होती। मां बच्चे की फिक्र में दिन का सुकून और रात का चैन कुर्बान कर के भी खुश रहती है, सूरत देखते ही बाप की सारी उलझनें दूर हो जाती हैं, मां बाप की क्या बच्चों के भोले चेहरे और उनकी भोली भाली बातें किस का दिल मोह नहीं लेती, कौन है जो उन को हंसता खेलता देख कर खुश नहीं होता, संजीदा से संजीदा (गंभीर स्वभाव वाला) आदमी उनकी हरकतों (गतिविधियों) पर मुस्कुरा देता है। जन्नत के इन फूलों के खिलने से हर घर में रौनक (प्रफुल्लता) और हर चमन में बहार आ जाती है। चारों ओर प्रसन्नता की हवाएं चलती, सुगन्ध ा बिखेरती और हर एक को गुदगुदाती हैं, गरज हर तरफ खुशी की एक लहर दौड़ जाती है जिस के कारण यह हैं –

जन्नत का यह फूल सानिअे हकीकी (सर्व सृष्टा) की सन्नाअ़ी (कला) का अनमोल उपहार है।

इस में अल्लाह ने असाधारण आकर्षण रखा है।

इस से मिल कर आंखें ठण्डी, कल्ब मुतमइन (मन सन्तुष्ट) और गम गलत हो जाता है।

इस से परिवार चलता है।

यह इच्छाओं तथा आकांक्षाओं का केन्द्र होता है, भविष्य में इस से नाना प्रकार की आशाएं होती हैं।

परन्तु इन खुशियों के साथ बच्चा बहुत से उत्तरदायित्व भी लाता है जैसे –

खुश दिली से उस को पालना पोसना।

उस के साथ शफकत व महब्बत का बरताव करना सहानुभूति तथा हृदयलीनता से उसे सिखाना पढ़ाना।

तदरीज (क्रम) से प्रिय स्वभावी बनाना।

हर अवसर के नियमों से अवगत कराना।

सभ्यता के नियम बताना।

स्वच्छ तथा शुद्ध विश्वासी बनाना सुकर्मी तथा सुचरित्र वाला बनाना। उसके स्वस्थ्य, सुरक्षा तथा उन्नति व सफलता की चिन्ता करना। यह सब वह महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व हैं जो बच्चे के विषय में मां बाप पर आते हैं, शायद ही कोई बाप ऐसा हो जिसे इन जिम्मेदारियो का एहसास न हो और वह इन्हें पूरा करने की इच्छा न रखता हो। अपनी सन्तान पर जान छिड़कना यह तो एक प्राकृतिक मांग है। जानबूझ कर कौन इस में कोताही करेगा या असावधानी बरतेगा? बाप ही वह व्यक्तित्व है जो अपनी सन्तान को अपने से बढ़ चढ़ कर देखना चाहता है परन्तु ऐसे भाग्यमान कम ही हैं जिन की यह कामना पूरी होती है और जो अपनी जिम्मेदारियों को पूर्णतया पूरा कर पाते हैं, इस लिए कि केवल कामना से सारे काम नहीं बना करते शिक्षा दीक्षा के लिए सुशीलता तथा योग्यता भी चाहिए तथा असाधारण परिश्रम (गैर मअमूली जिदद व जुहद) भी चाहिए जब इन में कमी हो तो किसी अच्छे परिणाम की आशा कैसे हो सकती है।

बच्चों की तअलीम व तरबीयत में आम तौर से क्यों नाकामी होती है इस के निम्न लिखित कारण है –

१. शिक्षा दीक्षा का कार्य बहुत ही धैर्य वाला तथा पित्ते मारी का है, यह काम जितनी चिन्ता, दिलसोजी (हृदय लीनता) चेष्टा तथा श्रम चाहता है उसके लिये कम ही लोग तैयार होते हैं।

२. साधारणतया बच्चे की आयु तथा क्षमता से अधिक कामनाएं जोड़ ली जाती हैं और जब उन से बारम्बार कोताहियां और चूकें होती है और उन्नति वेग भी आशा के विरूद्ध बहुत ही धीमा दिखाई देता है तो बच्चे के सुधार प्रयास की ओर से निराश होकर लोग अपनी चेष्ठाआं में कमी कर देते हैं, बल्कि अपने स्वभाव तथा बरताव से स्वयं बच्चों को भी निराशी बना देते हैं उन में

आत्मविश्वास समाप्त हो जाता है।

३. पूरे समाज में बिगाड़ है, बड़ों के गलत आदर्श, हमजोलियों की कुसंगतों अदृष्ट प्रभाव से बच्चे बराबर प्रभावित होते हैं अतएव अच्छे भले मां बाप के बच्चों में भी बिना संकल्प तथा चेतना के भांति भांति के विकार जड़ पकड़ लेते हैं।

४. जिस बच्चे की भी समीक्षा कीजिए तो यही ज्ञात होगा कि कुछ अगर संवारने की कोशिश करते हैं तो बहुत से बिगाड़ने के पीछे पड़े रहते हैं।

५. जीवन आवश्यकताएं अब सीमित न रह कर उन की सूची बहुत विस्तृत हो गई है। आर्थिक व्यवस्था तथा उसका ढांचा प्रति दिन गूढ़ होता जा रहा है अतः आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दौड़ धूप से छुट्टी नहीं मिलती बच्चों की शिक्षा दीक्षा की ओर ध्यान देने का अवसर कहां से प्राप्त हो।

६. उचित शिक्षा दीक्षा हेतु जिस योग्यता तथा कुशलता की आवश्यकता है अधिक लोग उस से खाली होते हैं अतएव उनकी चेष्ठाओं से अच्छे परिणाम के स्थान पर उस का उल्टा हो जाता है।

७. मां बाप के अच्छे सम्बन्ध न होने, या उन के दूर होने या उस के न होने के प्रभाव भी शिक्षण तथा प्रशिक्षण पर पड़ते हैं।

८. भ्रष्टव्यवस्था ने जीवन के आदर्श बदल दिये हैं। भौतिक वाद लोगों के मस्तिष्क पर छा गया है, बच्चों की दुन्या संवारने और उनका सांसारिक भविष्य बनाने के लिए अच्छे भले लोग अपने जिगर के टुकड़ों के ईमान व अख्लाक को अपने हाथों शैतान की भेंट चढ़ा देने में किसी भय का अनुभव नहीं करते।

९. कितने लोग अपनी आर्थिक समस्याओं, बीमारियों या दूसरी आपत्तियों के कारण अपने बच्चों की शिक्षा दीक्षा स्वयं नहीं कर पाते, कहीं से उनको कोई सहयोग भी नहीं मिल पाता इस लिये कि उद्योगिक परिवर्तन ने पारिवारिक व्यवस्था को उथल पुथल कर दिया है, समाजी बन्धन भी ढीले पड़ चुके हैं, अतः मां बाप की कोताही अचेतना अथवा विवशता पर परिवार के अन्य लोग स्वयं इस भार को उठाने को तैयार होते हैं न समाज ही उन पर दबाव डालता है न समाज स्वयं कोई प्रबन्ध करता है।

१०. बच्चों को व्यस्त रखने और उनके फुर्सत के समय को सफल बनाने हेतु रोचक रचनात्मक कार्य या उचित खेलों की कोई व्यवस्था नहीं होती जिस के कारण बच्चों की योग्यताएं गलत रुख इख्तियार कर लेती हैं, वह आवारागर्दी के शिकार हो जाते हैं और भांति भांति की बुराइयों में पड़ जाते हैं।

११. समाज में फैली अश्लीलता, निर्लज्जता, चरित्र हीनता दृष्टि को भाने वाले बुरे दृश्य, गन्दे लिट्रेचर, गन्दे चित्रों घिनावने पोस्टरों की भरमार, चरित्र नाशक फिल्मों, गन्दी लघु कथाओं, रूमानी तथा जासूसी नाविलों की अधिकता से सुधार चेष्ठाओं पर पानी फिर जाता है।

१२. बच्चों के व्यक्तित्व पर घर, स्कूल, मक्तब, वातावरण, समाज, और शासन हर एक का कुछ न कुछ असर पड़ता है, उचित तथा आदर्श शिक्षा दीक्षा के लिए इन सब में सहयोग तथा समन्वय आवश्यक है, परन्तु यहां इस का अभाव हम आहंगी (समन्वय) तो अलग रही इन में से हर एक चेष्ठाओं की दिशा अलग अलग है। घर के लोग फिक्र करते हैं तो अच्छे मदरसे नहीं मिलते, मदरसा अपनी जिम्मेदारियों को निभाता है तो औरों से सहयोग नहीं मिलता अतएव अधिकांश बच्चे इसी तनाव और खींचा तानी के शिकार हो जाते हैं।

तअलीम व तर्बियत की ओर से असावधानी न केवल व्यक्ति, परिवार अपितु समाज तथा देश के लिए आशंका प्रद और हानिकारक सिद्ध होती है इस लिए कि :

बच्चे नाकारा और निकम्मे रह जाते हैं, उन की प्राकृतिक शक्तियां तथा योग्यताएं या तो ठिठुर जाती हैं या गलत रूखधारण कर लेती हैं।

बच्चे नाना प्रकार की बुराइयों में फंस कर दीन व दुनिया दोनों बरबाद कर लेते हैं।

आंखों की ठण्डक और बुढ़ापे की लकड़ी बनना तो अलग रहा उल्टा कांटा बन कर खटकते और बोझ कन कर रहते हैं।

बाप दादा की गाढ़ी कमाई बेदर्दी से उड़ा देते हैं।

खान्दान के चश्म (आंख) व चिराग बनने के बजाए उस का नाम डुबोते हैं ।

अपने खराब स्वभाव से दीन व मिल्लत को बदनाम करते हैं। जराइम पेशा (अपराधी) होकर सब के लिए सिर दर्द बनते हैं तथा देश व समाज को तरह तरह से नुकसान पहुंचाते हैं।

समाज, अच्छे चरित्रवान, सच्चे सेवक तथा देश अच्छे नागरिकों से

वंचित हो जाता है।

उन के लिए शासन को जेलों, कचहरियों, न्यायालयों, थानों, स्पतालों पर काफी पैसा खर्च करना पड़ता है।

देश की अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक नैतिकता के लिए वह घुन सिद्ध होते हैं।

तात्पर्य यह कि जन्नत के वह फूल जो खुशबू फैलाने के लिए खिले थे और आरम्भ में हर एक की प्रसन्नता की सामग्री थे, अचेतना तथा असावधानी के परिणाम स्वरूप मल का ढेर बन जाते और अपनी दुर्गन्ध से सब का नाक में दम कर देते हैं और इस असावधानी तथा अचेतना का प्रकृति हर एक से बदला लेती है।

इस का उल्टा यदि बच्चों की शिक्षा दीक्षा पर ध्यान दिया जाए तो –

उन की योग्यताएं उभरती, सीरतें संवरती और दीन व दुन्या में उन्हें सफलता मिलती है।

उस उद्देश्य की पूर्ति में उन से सहयोग मिलता है जिस के लिए अल्लाह ने उन्हें जमीन पर भेजा है।

वह अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के संभालने के योग्य हो जाते हैं।

वह अल्लाह के सदाचारी बन्दे, समाज के निस्वार्थ सेवक और देश के निष्ठावान नागरिक बनते हैं।

उनका अस्तित्व अपने देश तथा समाज सब के लिये ईश दया, क्षेम कुशल तथा सम्पन्न का कारण बनता है।

सांस्कृतिक विकास में उनकी योग्यताओं से सहयोग मिलता है।

देश की आर्थिक दशा तथा राष्ट्र व्यय तथा उसकी व्याकुलता में कमी आती है।

तात्पर्य यह कि शुद्ध शिक्षा पर लगाया गया धन, श्रम हर एक के हक में लाभप्रद सिद्ध होता है।

परन्तु खेद की बात यह है कि हमारी तथा राजनीतियों की कुचेतनाओं से समस्त संसार पर एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था व्याप्त हो गई है जो अपने चित्र विचित्र विषयों, कार्यों, पाठ्यक्रमिक तथा सहयोगिक पुस्तकों, बाहय पाठ क्रम पुस्तकों, व्यस्त गलियों तथा सांस्कृतिक प्राग्रामों आदि द्वारा जो कुछ एक विद्यार्थी को सिखाता है वह यह है–

खुदा परस्ती एहसासे जिम्मेदारी और अखलाकी कदरों का पासदारी सिखाने के बजाए खुदा से बेनियाजी आखिरत की बाज पुर्स से बेखौफी और अअला इन्सानी कदरों की बेकदरी सिखाता है या फिर शिर्क व तवह्हुम परस्ती (अन्धविश्वास) तअस्सुब (पक्षपात) व तंग नजरी, मुल्की व कौमी असबीयत (देश तथा राष्ट्र पक्षपात) खुद गरजी (स्वयं स्वार्थ) व खुद नुमाई (आत्म प्रदर्शन) अय्याशी (भोग विलास) व तन आसानी (सुख प्रियता) में ग्रस्त हो जाता है।

भौतिक उन्नति तथा आर्थिक सम्पन्नता को तो अन्तिम उद्देश्य ठहराता है, परन्तु जीवन चरित्र को सुधारने की ओर कुछ भी ध्यान नहीं देता।

प्रत्यक्ष है यदि इस व्यवस्था में बदलाव न लाया जाए तो इस के अंतर्गत परवान चढ़ने वाली नस्लों से सामूहिक रूप में किसी भलाई की आशा बेकार है। अल्बत्ता बुराइयों का भय सदैव लगा रहेगा।

रहे दीनी इदारे जो सहीह तअलीम व तर्बियत के अलमबरदार (अर्थात जिन का कहना है कि हम शुद्ध शिक्षा व दीक्षा का प्रबन्ध करते हैं) और जिहालत की अन्धेरियों में रौशनी के मनार रहे हैं और जिनसे हिदायत व रहनुमाई के सोते फूटते और खुदा की मख्लूक को लाभ पहुंचता था वह भी अब अपनी बेहिसी मिल्लत की अदम तवज्जुही, परायों की रकाबत बातिल से मरअूबीयत, दीनी गैरत व हमीयत के फुक्दान, ईसार व बेलौसी की कमी, असातिजा की इल्मी व अमली कोताहियों, उलूमे दीनी व दुन्यावी की अमलन तफरीक, अपने यक रूखे पन और अज कारे रफता (लाभ रहित) निसाब व निजाम (पाठ्यक्रम) व्यवस्था आदि के कारण ठिठुर रहे हैं और प्रतिदिन उन का लाभ घटता और उनका क्षेत्र सुकुड़ता जा रहा है।

यह बात सभी दीनी इदारों पर लागू नहीं होती हम देखते हैं कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा इतना काम्याब चल रहा है कि बहुत से तलबा को दाखिले नहीं दे पाता। (अनुवादक)

इस सूरते हाल का तकाजा यह है कि तमाम अफराद और जमाअतें इस्लाहे हाल (इस दशा के सुधार) की ओर ध्यान दें और व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से जो कुछ कर सकते हैं। उसमें कमी न करें, गैर मअमूली जिद्द व जुहद (असाधारण श्रम) और पामर्दी व इस्तिकलाल (धैर्य) से हालात का मुकाबला किया और उस का रूख मोड़ा जा सकता है।

(माशाअल्लाह नदवतुल उलमा ने इस विषय में बहुत कुछ किया और बराबर कर रहा है)

(शेष पृष्ठ २० पर)

एक लीडर जिसे भुला दिया गया

कुलदीप कौर

शैख अब्दुल्लाह को भारत में सही स्थान नहीं दिया गया और कश्मीर में भी अब उनको कम ही याद किया जाता है। एक जमाना था जब उन्हें कश्मीर का गांधी का जाता था क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य और जम्मू कश्मीर के महाराजा के खिलाफ संघर्ष में भाग लिया था। अगर शैख की रजामन्दी न होती तो (और हिन्दुस्तान के साथ जुड़े रहने के लिए जवाहर लाल नेहरू ने भी शर्त यही रखी थी), नई दिल्ली महाराजा के विलय के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता था और न ही कश्मीरी जनता श्रीनगर में हिन्दुस्तानी सिपाहियों के आने तक पाकिस्तान के कबाईलियों और पाकिस्तानी फौज के हमले के खिलाफ शैख के नेतृत्व में खुद को संघटित कर सकते थे। इस के बावजूद शैख को जिनके नेहरू से जाती सम्बन्ध थे, बारह वर्षों तक नजरबन्द रहना पड़ा क्योंकि वह नई दिल्ली की नजरों में संदिग्ध (मशकूक) हो गयें थे। उन्होंने नई दिल्ली को अपनी हुकूमत में तीन विषयों तक सीमिति रहने का वादा याद दिलाया और वह थे सुरक्षा, विदेश नीति, संचार। जम्मू कशमीर केवल इसी वादे पर भारतीय संघ में शामिल हुआ। परन्तु नई दिल्ली अन्य अधिकारों में दखल देने की कोशिश कर रहा था।

लेकिन इससे विलीनीकरण के सम्बन्ध में शैख के विचारों में कोई बदलाव नहीं आया। अस्लीयत यह है कि उन्होंने सन् १९५२ में राज्य के संविधान एसेम्बली की तरफ से अधिकार प्राप्त संविधान (दस्तूर) को कानूनी वैधता (जवाज) दे दी थी। फिर भी वह चौकन्ना हो कर इस स्वाधीनता की रक्षा करते थे जो भारती संघ के अन्दर उनके राज्य को प्राप्त रही। दुर्भाग्य से नई दिल्ली के खिलाफ बगावत को मुद्दा बनाने वाले लोगों ने नेहरू पर अपना प्रभाव डाला और को डाई कनाल में शैख को हिरासत में रखने के बाद नेहरू ने बचाव का रवैया इख्तियार किया। इसके स्पष्टीकरण (वजाहत) के तौर पर उन्होंने राज्यों के मुख्यमंत्रियों को एक पत्र लिखा जिनमें से कुछ के नेहरू से जाती सम्बन्ध थे।

१२ अगस्त १९५३ के पत्र में कहा गया था कि कशमीर की हुकूमत काम नहीं कर सकती थी क्योंकि हर चीज अव्यवस्थित थी। शैख अब्दुल्लाह का व्यवहार कठोर से कठोर होता गया और अब ऐसा लगा कि वह कश्मीर की हर चीज को बरबाद करने पर तुल गए हैं। अस्लियत यह है कि एक मित्र से बातचीत के दौरान उन्होंने (शैख ने) कहा कि वह राज्य को आग लगा देंगे। मैं नहीं जानता कि इस से उनका तात्पर्य क्या था लेकिन इस से जाहिर होता है कि मनोदशा जो मामूल के मुताबिक काम कर रही थी असन्तुलित होने लगी थी। इसलिए हमें बराबर परेशानी होने लगी कि कहीं कोई तबाही न आ जाय।

यह बड़ी कठिन और दुखदायी परिस्थिति थी। इसे रोकने के लिए कोई कदम उठना भी खतरे को दावत देना था। अगर कोई रह गया था तो वह यह भी कि जैसा कि हमारे जमाने में अकसर होता है, कमतर गुनाह को कुबूल कर लिया जाय।

नेहरू को यह एहसास होने में बारह साल लगे कि उन से गलती हुई थी। इस अवध में शैख ने अपनी हिरासत की शिकायत कभी नहीं की और नाहीं उन्होंने अपने पास मुलाकात के लिए आने वाले लोगों से कोड़ाई कनाल मे बात करते हुए नई दिल्ली पर कोई टिप्पणी की। इन मुलाकातियों में एक गांधियाई जय प्रकाश नरायण भी थे। शैख ने अपनी रिहाई के बाद भी किसी सख्ती का प्रदर्शन नहीं किया रिहाई के चन्द रोज बाद मैंने उनसे मुलाकात की। जो कुछ उन्होंने ने मुझ को बताया वह यह था कि "नेहरू को बहकाया गया था।" उन्होंने नेहरू के साथ अपनी दोस्ती को याद किया और मेरे लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। शैख रिहाई के बाद नेहरू के साथ ही ठहरे थे। वास्तव में शैख ने ही कशमीर समस्या हल करने के लिए पाकिस्तान के साथ बात चीत की सलाह नेहरू को दी थी। नेहरू ने शैख को १९६४ में इस्लामाबाद रवाना किया कि वह उस समय के शासक अय्यूब खां से बात करें। १९७२ में अय्यूब के साथ मेरी मुलाकात के दौरान जो बात उन्होंने ने मुझे बताई वह यह थी कि "उम्र के

आखिरी हिस्से में नेहरू को इस परिस्थितियों का तर्क समझ में आया और उन्होंने पाकिस्तान से समझौता करने की अतिधिक इच्छा जाहिर की है। शैख ने अय्यूब के बयान पर कोई टिप्पणी नहीं की। शैख ने केवल इतना ही कहा कि उन्होंने देर कर दी। क्योंकि शैख अभी इस्लामाबाद में ही थे कि नेहरू संसार से सिधार गये। पाकिस्तान के सूचना सचिव गौहर ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि शैख अपने साथ एक साझा सरकार का प्रस्ताव लेकर आये थे जिसे अय्यूब ने ठुकरा दिया लेकिन इस प्रस्ताव को हिन्दुस्तान या पाकिस्तान में पुष्टि नहीं हो सकी।

लेकिन शैख पर शक करने वालों को मैं बता सकता हूं कि रियासत की पहचान से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया और उसके साथ ही ना ही उन्होंने हिन्दुस्तान के साथ रियासत के विलय के फैसले पर कभी शक का इजहार किया। यह बात कि जम्मू कशमीर की जनता का समर्थन उनके इस विचार को प्राप्त था। इससे जाहिर है कि १९७७ के चुनाव में जो कि अब तक का रियासत का सब से अधिक साफ सुथरा चुनाव था शैख को भारी सफलता मिली थी और शैख ने कहा था कि चुनाव हिन्दुस्तान में विलय के हक में मतगणना है।

उस समय तक जनता सरकार सत्ता में आ चुकी थी शैख ने सत्ता से बाहर हुई इन्द्रागांधी को अपनी रियासत में आमंत्रित करके राज्याध्यक्ष के शायाने शान स्वागत किया। उन्होंने मुझे बताया कि मेरी बेटी अपने बाप के घर आई है मानो यह बताने का उन का यह अंदाज था कि उन्हें १२ साल तक हिरासत में रखने के बावजूद नेहरू उनके दोस्त ही थे।

चन्द वर्षों बाद जब इन्द्रागांधी दोबारा प्रधानमंत्री बन गईं उन्होंने शैख को मुख्यमंत्री मीर कासिम के नेतृत्व वाले कशमीर राज्य में एक पद (उहदे) की पेशकश की, शैख ने दिल्ली के साथ उन अधिकारों के प्रति जो श्रीनगर को प्राप्त हो सकते थे, एक समझौता किया था फिर भी उन्होंने महसूस किया कि समझौते में जिन बातों पर सहमत हुई है वह कशमीरियों की आशाओं पर पूरी नहीं उतर पाएंगी। उन्होंने ने इस्लामबाद की प्रक्रिया (रद्देअमल) का भी गलत अन्दाजा लगाया जिसने उनके पाकिस्तान के दौरे के बाद भी शैख से बागियाना रवैया रखा ताहम वह अक्सर इसकी शिकायत करते थे कि नई दिल्ली ने उन की रियासत की उन्नति पर ध्यान नहीं दिया और कंजूसी से काम लिया। धार्मिक शक्तियों ने बढ़ती हुई दूरी और जवानों की बेरोजागारी का अनाधकारपूर्णलाभ शुरू कर दिया।

शैख अब्दुल्लाह जो पूरे दिल से सेकुलर थे साम्प्रदायिक शक्तियों को कभी मुंह खोलने नहीं दिया जो रियासत की सूफियाना फजा (वातावरण) को खराब कर रहे थे। उनकी मौत के बाद उन्होंने (सम्प्रदायिक शक्तियों) ने इस आन्दोलन को बरबाद कर दिया।

जिसमें शुरू में आदर्श (Idealism) की झलक दिखाई देती थी और जिस ने हकदार उम्मीदवारों को न चुने जाने पर नवजवानों को बन्दूक उठाने पर आमदा किया।

शैख के पोते ऊमर अब्दुल्लाह ने कुछ दिनों पहले अपने दादा को श्रद्धांजलि पेश करते हुए बड़ी उचित बात कही है कि हुर्रियत इस रिवायत में आतंकवाद की चिनगारी भड़काने की जिम्मेदारी से दामन झाड़ नहीं सकती। हुर्रियत की निन्दा करते हुए उमर अब्दुल्लाह जाहिर है अपने दादा के सिद्धान्तों को याद कर रहे थे अगर अमल खराब होगें तो नतीजे भी खराब होंगे।"

यही वह बात है जिस की तालीम महात्मा गान्धी और नेहरू ने दी थी। काश कशमीरी जनता शैख को समझ जाती और यह एहसास कर लेती कि वह किस चीज के सामने डटे हुए थे। वह रियास की पहचान के लिए लड़ने वाले ऐसे कशमीरी थे जिन पर गर्व किया जाना चाहिए।

अनुवाद - हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ ३१ का शेष)

इलाकों और तमाम तब्कों और धर्मों से ऐसे लोग मिल जायेंगे जो इन्सान दोस्ती की बुनियाद पर कन्धा से कन्धा मिलाकर एक काफिला और एक तहरीक (आन्दोलन) बनायें। आखिर आज से महज़ साठ साल पहले वतन की आजादी के लिए क्या इन्हीं लोगों ने एक काफिला नहीं बनाया था जरूरत बस उपाय और इकदाम की है और इसकी भी जरूरत है कि मकसद और लक्ष्य स्पष्ट हो। मेरा मानना है कि खैर पसन्द और रचनात्मक तत्व अब भी गालिब हैं। बस। एक शरीफ इन्सानी मक्सद के प्रति उन्हें सक्रिय बनाने की जरूरत है। क्या अजब कि यह इन्सान दोस्ती कान्फ्रेस इस राह में मील के एक पत्थर की हैसियत इख्तियार कर जाये।

(फोरम फार पीस एण्ड यूनिटी, लखनऊ द्वारा प्रकाशित इन्सान दोस्ती)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

अगस्त २००७ से साभार

इन्सान, दोस्ती और क़ुर्आन

जहीर अहमद सिद्दीकी नदवी

क़ुर्आन इन्सानों के लिए उनके रब की आखिरी हिदायत की किताब है। इस किताब का बुनियादी विषय इन्सान है और इन्सानों ही की नजात और भलाई इसका बुनियादी मकसद है। इस किताब ने जहां अपने ऊपर ईमान लाने वालों को सम्बोधित किया है वहीं इस का सम्बोधन आम इन्सानों की तरफ भी है। यह किताब चूंकि एक सांसारिक और अन्तर्राष्ट्रीय आहवान (दावत) की पहली बुनियाद और एहसास है इस लिये इस की निगाह में अपना व पराया की तकसीम कोई अर्थ नहीं रखती है। ईमान वालों के लिए अगर यह किताब एक स्थायी जीवन–पद्धति की हैसियत रखती है तो अपने ऊपर ईमान न रखने वालों के लिए इसकी हैसियत एक स्थायी वसील–ए–दावत (आहवान का साधन) की है।

विश्वव्यापी भाई चारा (विश्व बन्धुत्व)

क़ुर्आन शिक्षाओं की प्रथम बुनियाद तौहीद है। क़ुर्आन की निगाह में तमाम इन्सानों का रब, दीन और नसब एक है। "लोगो ! अपने परवरदिगार से डरो जिसने तुम को एक शख्स से पैदा किया, उस से उसका जोड़ा बनाया। फिर उन दोनों से कसरत से मर्द व औरत (पैदा करके भूतल पर) फैला दिये। और खुदा से डरो जिस के नाम को तुम अपनी हाजत बराबरी का जरिया बनाते हो। और रिश्ते नाते का भी ध्यान रखो और भूलो मत कि अल्लाह की तुम पर कड़ी निगरानी है। (सूरः निसा)

इस आयत में यह बात स्पष्ट है कि तमाम इन्सानों को एक ही जात ने पैदा किया है, और तमाम इन्सानों के नसब का सिलसिलाः एक ही मां–बाप तक पहुंचता है। इस आयत में कुर्आन ने विश्वबन्धुत्व की मजबूत और दायमी बुनियाद मुहैया की है। किसी इन्सान का मजहब, परिवार व कबीला और सभ्यता व संस्कृति कुछ भी हो वह महज इन्सानियत के हवाले से दूसरे तमाम इन्सानों का भाई है। एक दूसरी जगह कुर्आन कहता है कि उसने तुम्हारे लिये वही दीन मुकर्रर किया है जिसे अपनाने की नसीहत उसने नूह को की थी। और जिसकी 'वही' उसने तुम पर उतारी है और जिसे अपनाने की नसीहत हमने इब्राहीम, मूसा और ईसा अ० को की थीा अर्थात तुम दीन कायम करो और इस में अलगाव न डालो।" (४२–१३) इस आयत से मालूम होता हैं कि मानव–इतिहास के अलग अलग दौर में दीन अपनी बुनियादी वास्तविकताओं और शिक्षाओं के लेहाज से एक ही रहा है। हां, शरीअतें और उन के कानून के विवरण अलग अलग जुगों में समान नहीं रहे हैं। और न यह मुमकिन था न ही मुनासिब। लेकिन तमाम धर्मों के उसूल व बुनियादें हमेशा से समान रही हैं। यह उसूल और बुनियादें खुदाई, सतकर्म, हिसाब, जजा व सजा काम नैतिक मूल्यों, मानव–श्रद्धा और मानवाधिकारों के सम्मान पर आधारित हैं।

बहदते रब, वहदते नस्ल और वहदते दीन की उपरोक्त तीन बुनियादों पर कुर्आन जिस विश्वव्यापी इन्सानी सोच और समाज की तामीर करना चाहता है उस में मार–काट, लड़ाई झगड़ा, दहशतगर्दी और फितना परवरी की कोई गुंजाइश नहीं है। कुर्आन का वांछित समाज एक शान्ति–पूर्ण, सहानशील और इन्सान दोस्त दुनिया में ही कायम हो सकता है। एक ऐसी दुनिया में जहां ताकत और सत्ता के बजाय मूल्यों और नैतिकता की हुकमरानी हो, जहां विभिन्न समस्यायें बात–चीत और सोच–विचार के जरिये हल की जा सकें। जहां किसी कमजोर पर जबरदस्ती अपनी तहजीब (संस्कृति) थोपने के बजाय उस की तहजीब का एहतराम (सम्मान) किया जाये और उसे उस के जीवन के प्रति दृष्टिकोण (नजरिया–ए–हयात) के अनुसार जिन्दगी गुजारने का हक दिया जाये। एक ऐसे शान्ति–पूर्ण तथा इन्सान दोस्त विश्व व्यापी समाजकी स्थापना और अस्तित्व के लिए कुर्आनी तालीमात मूल्यों व नैतिक आचरण की एक पूरी व्यवस्था रखती हैं और अपने अनुयाइयों को इनके बर्तने का प्रबल निर्देश देती हैं। इस लेख में हम मिसाल के तौर पर इस व्यवस्था के कुछ एक हिस्सों व अंशों से परिचय कराते हैं जिन्हें इस व्यवस्था की बुनियादी विशेषतायें कहा जा सकता है।

कुर्आनी नैतिक मूल्यों की व्यवस्था की बुनियादें

न्याय व इन्साफ कुर्आन की नजर में इन्सानों के सामाजिक सम्बन्धों की पहली बुनियाद व असास न्याय की

स्थापना है। अतएव वह अपने अनुयाइयों को हुक्म देता है कि, "और किसी कौम की दुश्मनी तुम्हें इस पर आमादा न करे कि तुम न्याय न करो इन्साफ करते रहो कि यही तकवा (परहेजगारी) से ज्यादा करीब है। और अल्लाह से डरते रहो, बेशक वह तुम्हारे कर्मों से बाखबर है।" (कुर्आन ५–८) इन्साफ की तर्बियत देते हुए पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि कियामत के दिन अल्लाह तआला जिन सात लोगों को अपने अर्श के सायः में पनाह देगा उन में से एक इमाम आदिल (न्यायवान) है। अद्ल व इन्साफ के बारे में कुर्आन और पैगम्बरे इस्लाम की तालीमात का असर मुसलमानों की चौदह सौ सालः तारीख में रौशन नजर आता है। हजारों मिसालों में से सिर्फ एक मिसाल यहां दी जाती है। हजरत उमर रजि० के शासन काल में एक बार मिस्र के गवर्नर अमर बिन अलआस के बेटे ने एक किब्ती (किब्त की औलाद) के लड़के को नाहक कोड़े मार दिये। वह किब्ती मिस्र से मदीना आया और खलीफा उमर से गवर्नर और उनके बेटे की शिकायत की। हजरत उमर ने दोनों को दरबार में तलब किया और किब्ती लड़के को उमर बिन आस और उनके बेटे से बदला दिलवाया इसी मौके पर हजरत उमर ने मिस्र के गवर्नर को सम्बोधित करके अपना ऐतिहासिक कथन इरशाद फरमाया था, जिसे रहती दुनिया तक सोने के पानी से लिखा जायेगा, "ऐ अमर! तुम ने लोगों को गुलाम कब से बना लिया? उनकी माओं ने तो उन्हें आजाद जना था।" इस घटना की सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस्लाम के साम्राज्य की आम रिआया (प्रजा) भी अपने अधिकारों के प्रति कितनी जागरूक थी। और शासन की न्याय व्यवस्था पर उसका विश्वास कितना सुदृढ़ था। यहां यह स्पष्ट कर देना भी जरूरी है कि पारस्परिक और आपस के संवाद तथा अन्तर्सामाजिक सम्बन्धों के मधुरपन तथा बेहतरी का भी इन्साफ और न्याय से बहुत गहरा सम्बन्ध है। जब कभी और जहां कहीं भी इन्साफ के तकाजों की पामाली होगी तो न सिर्फ यह कि इन्सानों से इन्सानों के सम्बन्धों में दरार आयेगी बल्कि अमन व सलामती का माहौल भी प्रभावित होगा। मौजूदा आलमी पसमंजर (वैश्विक पृष्ठभूमि) में यह साबित करने के लिए कदाचित किसी इल्मी दलील की जरूरत नहीं है आजके ताकतवर समाज और नेशन्स जिस तरह इन्साफ का मजाक उड़ा रहे हैं वह किसी से छिपा नहीं है। अपने व्यक्तिगत, गिरोही और राष्ट्रीय हितों के लिए पूरे पूरे राष्ट्रों तथा इन्सानी सोसाइटीज को जन्नत से जहन्नम में तब्दील किया जा रहा है और इन्सानी हिस (अनुभूति) इतनी मुर्दा हो गयी है कि औपचारिक निन्दा से आगे बढ़ कर जालिम का हाथ पकड़ने और मजलूम को इन्साफ दिलाने के लिए कोई आगे आने की हिम्मत नहीं कर पा रहा है।

२. आजादी : कुर्आन की वांछित सोसाइटी की स्थापना के लिये दूसरी बुनियाद आजादी है। इस आजादी में अकीदा (आस्था) की आजादी, किसी जीवन के दृष्टिकोण को मानने की और बरतने की आजादी, और इजहारे राय की आजादी आदि सब शामिल हैं। कुर्आन गालिब वाहिद (अकेली) आसमानी किताब है जिसने मतभेद का न सिर्फ हक दिया है बल्कि विपरीत राय को अपने मतन (**script**) का हिस्सा बना कर स्थायितत्व प्रदान किया है। "और अगर आप का रब चाहे तो जमीन में जितने हैं सब को ईमान लाना पड़े, तो क्या तुम अब लोगों को मजबूर करोगो कि वह ईमान ले ही आयें।" (१०–९९)। दूसरी जगह इरशाद हुआ है, " दीन के बारे में किसी पर जोर जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए। ना समझी के मुकाबले में सही रास्ता खुलकर सामने आ गया है।" (२–२५६)। इस्लाम की निगाह में कुफ्र व ईमान इन्सान की जिन्दगी की सब से महत्वपूर्ण समस्या है जिस पर दुन्या ही नहीं आखिरत की दायमी कामयाबी और नाकामी का भी दारोमदार है। गौरतलब है कि इस महत्वपूर्ण समस्या में भी कुर्आन इन्सानी आजादी का सम्मान करता है तो जीवन के अन्य मामलों में वह इन्सानी आत्मा की आजादी क्योंकर नकारेगा। कुर्आन में बनी इस्राईल पर फिरऔन के जिन अत्याचारों और चार्जशीट का हवाला बार–बार आया है उन में से एक यह है कि फिरऔन ने बनी इस्राईल को गुलाम बनाकर रखा हुआ था, उन्हें न अपने अकीदा के अनुसार इबादत करने की आजादी थी और न अपनी तहजीब के अनुसार जिन्दगी बसर करने की। कुर्आन की निगाह में इन्सानों की सोच की आजादी एक बुनियादी हक है जिस की बहाली के लिए नबी आते रहे और आसमानी किताबों का नुजूल होता रहा आसमानी किताबें उतरती रही हैं और जिसकी पामाली (अनादर) करने वालों को रहती दुनिया तक के लिए नमून–ए–इबरत बना दिया गया है।

३. मुसावात (बराबरी) : कुर्आन चूंकि वहदते इन्सान (मानव–एकता) का कायल है इसलिए इसकी निगाह में यह जरूरी है कि मनुष्य के बीच किसी भेद–भाव के बिना बराबरी पायी जाये, और इस तरह उन्हें अपने बुनियादी अधिकारों से लाभ उठाने के बराबरी के अवसर प्राप्त हों कुर्आन की निगाह में तमाम इन्सान एक ही मां–बाप की औलाद हैं, और उनके बीच बरतरी का पैमाना सिर्फ सत्कर्म और आचरण की उत्कृष्टता है। कुर्आन का इरशाद है "ऐ इन्सानो ! हमने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा फरमाया और तुमको खानदान और कबीले वाले बना दिये ताकि एक दूसरे को पहचान सको। और अल्लाह के यहां तुम में से सब से इज्जत वाला वह आदमी है जो नाफरमानी से बचने का बहुत ज्यादा ख्याल रखता हो। बेशक अल्लाह तआला इल्म वाला और खबर रखने वाला है। (४६–१३)। पैगम्बर मुहम्मद सल्ल० की स्पष्ट तालीम है, "ऐ लोगो! तुम सब का रब एक है और तुम्हारा बाप भी एक है। किसी अरबी को किसी अजमी (गैर अरब) और किसी अजमी को किसी अरब पर और किसी गोरे को किसी काले पर और किसी काले को किसी गोरे पर कोई बरतरी हासिल नहीं है। हां बरतरी का पैमाना खुदा का खौफ और सतकर्म है। सो अल्लाह की निगाह में तुम में सबसे अफजल व बरतर वह है जो सब से ज्यादा खुदातरस और बाकिरदार हो। वर्तमान युग में जब कि लोकतन्त्र की बरकतों से इन्सानों के बीच नस्ली और पैदाइशी हवालों से ऊंच–नीच और शरीफ व निकृष्ट की तकसीम कम हुई है हमें इन इस्लामी तालीमात स्थापित करने की राह में कोई रूकावट नहीं है बल्कि यह तो इस्लाम का अभीष्ट है कि भूतल पर तमाम इन्सानों के बीच इन्सानी बुनियादों पर मुसावात और बराबरी कायम हो।

४. मानवता के प्रति आदर : कुर्आन की तालीम है कि किसी भी किस्म के दीनी, नस्ली तहजीबी और भाषायी हवालों के बिना तमाम इन्सान बहैसियत इन्सान मोहतरम हैं। "बेशक हमने आदम की औलाद को बड़ी इज्जत दी और जमीन पर जंगल, दरिया में हर जगह उनको सवारी अता की और खाने के लिये पाकीजा और सुथरी रोजी दी, और अपनी बहुत सारी मखलूक (प्राणी) पर उनको खास फजीलत (प्रतिष्ठा) दी" (१७–७०)। अल्लाह की निगाह में अपने इमकानात के लेहाज से हर आत्मा काबिले कदर है। और यही कारण है कि उसने तमाम इन्सानों से संकल्प लिया था और तमाम इन्सानों को इस धरती की खिलाफत का सजावार (योग्य पात्र) करार दिया है। (देखें कुर्आन ७–१७२ और २–३०)। कुर्आन की निगाह में इन्सानियत की डिगनिटी का अन्दाजा इस से किया जा सकता है कि वह नाहक किसी एक इन्सान के कत्ल को पूरी इन्सानियत का कत्ल करार देता है, और किसी एक मानव आत्मा की सुरक्षा को पूरी मानवता की सुरक्षा का पर्याय समझता है। (देखें कुर्आन ५–३२)। मानव–प्रतिष्ठा को तअल्लुक से उल्लिखित कुर्आनी तालीम जितनी सार्थक वर्तमान युग में है उतनी शायद पहले कभी न रही हो। आज की हमारी सभ्य दुनिया में अगर कोई चीज सस्ती और बेवकअत है तो धनदौलत और सम्पत्ति की सुरक्षा और प्रतिष्ठा की बातें निरर्थक ही समझी जायेंगी।

५. मानवाधिकार की प्रतिष्ठा : मानवाधिकार इस दौर का शानदार तथा उत्कृष्ट विषय है। दुनिया के विभिन्न देशों ने अपने अपने दस्तूर में अपने मुल्क के शहरियों (नागरिकों) और आम इन्सानों के लिए कुछ बुनियादी भधिकार निर्धारित किये हैं। इस्लाम को यहां भी सबकत हासिल है और इस का मौखिक (तहैयः) मानवाधिकार के प्रति सुस्पष्ट है। यह मौका इसका नहीं है कि कुर्आन व सुन्नत से इस्लाम की निगाह में स्वीकृत मानवाधिकारों की सूची पेश की जाये। अलबत्ता यहां पैगम्बर मुहम्मद सल्ल० के उस ऐतिहासिक सम्बोधन का हवाला देना अनुचित न होगा जो आप ने हज्जतुलविदा के मौके पर इरशाद फरमाया था। इस सम्बोधन को बजातौर पर मानव–इतिहास में मानवाधिकार का पहला मंशूर (राजाज्ञा) तस्लीम किया जाता है। फरमाया, "ऐ लोगो! तुम्हारा खून और तुम्हारा माल एक दूसरे पर हराम है। जैसे आज का यह दिन और महीना और यह शहर (मक्का) मोहतरम है। सुनो ! जाहिलियत (अज्ञानता) के दौर की जो भी नहूसतें थीं उन्हें आज मैं अपने पैरों तले रौंदता हूं। जाहिलियत के खून और सूदी मामले आज से समाप्त किये जाते हैं। और तुम लोग अपनी औरतों के बारे में अल्लाह से डरते रहना क्योंकि तुम उन्हें अल्लाह की जमानत पर हासिल करते हो और अल्लाह ही के नाम पर उन की इज्जत और असमत को अपने लिये जायज करते हो।

६. सह अस्तित्व : इस्लाम के

खिलाफ एक इल्जाम यह आयद किया जाता है कि यह एक अलैहदगी पसन्द मजहब है और अपने मानने वालों में भी अलैहदगी पसन्द विचारों व नजरियात को रिवाज देता है। हालांकि सच्चाई यह है कि इस्लाम वाहिद आसमानी मजहब है जो अपनी बुनियाद से ही एक विश्वव्यापी और अन्तर्राष्ट्रीय सोसाइटी का आहवान करता है। ऐसा इल्जाम लगाते समय लोग यह भी नहीं सोचते कि इस्लाम एक दावती और तब्लीगी मिशन का नाम है और कोई भी दावती मिशन अलैहदगी पसन्द हो ही नहीं सकता। हां यह हो सकता है कि इस्लाम के मानने वाले इसकी सही और सच्ची नुमाइंदगी में नाकाम रहे हों। सह अस्तित्व को एक आला इन्सानी कदर के तौर पर इस्लाम न सिर्फ यह कि तस्लीम करता है बल्कि अपने मानने वालों को इसे रिवाज देने और फैलाने की हिदायत देते है। कुर्आन में अल्लाह ने अपने नबी की जबान से एलान कराया है, "ऐ नबी! आप कह दीजिए कि ऐ अहले किताब ! आओ एक ऐसी बात की तरफ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान मुश्तरक है (यह) कि हम अल्लाह के सिवा किसी (और) की बन्दगी न करें और उसके साथ किसी और चीज को शरीक न करें, और हम में कोई अल्लाह को छोड़कर किसी दूसरे को अपना रब न करार दें। फिर (भी) अगर वह चीज (हक से) कतरायें तो उन से कह दो कि गवाह रहो कि हम ने तो (अल्लाह) की फरमांबरदारी इख्तियार कर ली" (कुर्आन ३–६४) एक दूसरी आयत में पैगम्बर मुहम्मद सल्ल० को हुक्म दिया गया है," सो आप इसी बुनियाद पर दावत दें, और रास्तबाज रहें जैसा कि आप को हुक्म दिया गया है, और आप इन की इच्छाओं के पीछे न चलें, और कहें कि मै। ईमान रखता हूं हर उस किताब पर जो अल्लाह ने नाजिल फरमाई है। और यह कि मुझे हुक्म दिया गया है कि तुम्हारे बीच इन्साफ करूं, अल्लाह ही हमारा रब है और तुम्हारा भी, हमें हमारे आमाल की जजा मिलेगी और तुम्हें तुम्हारे आमाल की। हमारे और तुम्हारे दरमियान कठहुज्जती की जरूरत/गुंजाइश नहीं है। अल्लाह एक दिन हम सब को जमा फरमायेगा, और अन्ततः उसी की तरफ पलट कर जाना है।" (४२–१५)। नबियों की जमाअत में पैगम्बर मुहम्मद सल्ल० की हैसियत तकमीली (परिपूर्णता) है न कि निजाई। और इस हकीकत की तरफ खुद आपने इरशाद फरमाया है, "मेरी और मुझ से पहले गुजरे हुए नबियों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई व्यक्ति एक घर बनाये और उसे खूब बनाये संवारे लेकिन घर के किसी कोने में एक पत्थर की जगह खाली छोड़ दे। अतएव लोग इस घर का तवाफ (परिक्रमा) करते हैं और इसे पसन्दीदगी की नजर से देखते हैं और कहते है काश कि यह पत्थर भी लगा दिया जाये, सो मैं वही पत्थर हूं और मैं खातमन्नबीयीन हूं।" (बुखारी व मुस्लिम)

७. दरगुज़र और रवादारी : एक ऐसे समाज में जहां अनेक धर्म हों और जहां विविधिता हो, कुर्आन अपने माननेवालों को धैर्य, उदारता, पारस्परिक विश्वास व सम्मान और दरगगुजर की तालीम देता है। दूसरे धर्मों उनके पवित्र स्थलों, उनकी पहचान और उनके पेशवाओं के सम्मान की तलकीन (दीक्षा) करता है। सहीफों की तस्दीक व ताईद करता है। इस के अलावा कुर्आन अपने ऊपर ईमान लाने वालों के लिय पूर्व आसमानी किताबों पर ईमान लाना जरूरी करार देता है, वह ईमानवालों को हुकम देता है, "तुम लोग उन्हें जिन को यह (गैर मुसलमान) अल्लाह के सिवा पुकारते हैं बुरा भला न कहो, कहीं वह भी अल्लाह के लिए नाजेबा कल्मात इस्तेमाल करें। (६–१०८)

८. वचन–बद्धता (ईफा–ए–अहद) : सम्पर्क या सम्बन्ध का स्तर कुछ भी हो उन्हें बाकी रखने और बेहतर बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण शर्त यह है कि लोग आपस में दिये जाने वाले वचन और किये जाने वाले वायदा का सम्मान करें, विशेष कर बहुधर्मी समाज में इस शर्त का महत्व और भी बढ़ जाता है। कुर्आन का दृष्टिकोण इस सिलसिले में भी सुस्पष्ट और दो टूक है। कुर्आन की तालीम है, "अहद व पैमान को पूरा करो, इन के बारे में तुम से पूछा जायेगा (१७–२२)। ऐ लोगो जो ईमान लाये हों, वचन को पूरा करो," (५–१७)। इस्लामी तारीख में कुर्आन व हदीस की इन तालीमात की छाया साफ नजर आती है और निस्संदेह यह बात कही जा सकती है कि मुसलमान अपनी सत्ता के जमाने में बचन–बद्धता का सर्वाधिक सम्मान करने वाले रहे हैं। बहुआयामी पतन के दौर में निश्चय ही मुसलमानों की यह सिफात भी प्रभावित हुई है।

९. पारस्परिक विश्वास और सहयोग : कुर्आन ने अपने मानने वालों को हुकम दिया है कि वह सद्गुणों के विकास के लिए आपसी सहयोग की चाल अपनायें जब कि उन्हें ऐसी बातों में सहयोग से मना भी किया गया है

जिन से सद्गुणों की पामाली होती है याबुरइयों को बढ़ावा मिलता है। कुर्आन का हुकम है, "नेकी और सच्चाई के कामों में एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और सरकशी (उद्दण्डता) के कामों में सहयोग से बाज रहो।" (५–२)। यह एक उसूली हिदायत है जिसके आलोक में मुसलमान इस दुनिया की उन तमाम ताकतों के साथ दोस्ती तथा परस्पर सहयोग का तअल्लुक कायम कर सकते हैं जो इस धर्ती पर नेकी और सच्चाई के विकास के लिए उन के साथ काम करने पर आमादा हों। स्वयं पैगम्बर मुहम्मद सल्ल० ने इस तरह के मुआहदे (सन्धि) मदनी दौर की शुरूआत में यहूद व मुश्रिकीन के विभिन्न कबीलों से किये थे, और इस सिलसिले की सबसे स्वर्णिम मिसाल (हल्फुल फुजूल) की वह घटना है जो आप के अभ्युदय से लगभग बीस–बाईस वर्ष पहले पेश आयी थी। इसका विवरण यह है कि मक्का के कुछ नेक तीनत कबीलों ने आपस में एक करारदाद किया था जिस की ध ाारायें निम्नवत थीं –

(१) खुदा की कसम शहर मक्का में किसी पर जुल्म हो तो हम सब जालिम के खिलाफ मजलूम की ताईद में एक हाथ बनकर उठेंगे चाहे वह शरीफ हो या दबदबे वाला, हम में से हो या अजनबियों में से, जब तक कि मजलूम को उसका हक न मिल जाये।

(२) हम इस हल्फ की खिलाफवर्जी न करेंगे प्रकृति अपना काम करती रहे।

(३) और हम सार्वजनिक जीवन में आपस में माली मदद करेंगे।

खुलास : (उपसंहार)

सामाजिक या धार्मिक विविधता सम्बन्धों के सन्दर्भ में कुर्आन जिन नैतिक मूल्यों और आचरण की शिक्षा देता है उन के कुछ अंशों को परिचय यह साबित करने के लिए काफी हैं कि इस्लाम कोई तशद्दुद (सख्ती) पसन्द या उज़लत (गोशः नशीनी) पसन्द मजहब नहीं है। वह अपनी तालीम और तरबियत (शिक्षा–दीक्षा) के जरिये एक शान्तिपूर्ण सहनशील और इन्सान दोस्त समाज की रचना चाहता है। इतिहास के कुछ जमानों में इसे अपने मकसद में कामयाबी भी मिली है। और अगर दिल से और साबित कदमी के साथ कोशिश की जाये तो कोई कारण नहीं कि इसे अपने मकसद में फिर कामयाबी न मिले।

समय की मांग :

कुर्आनी तालीमात और पैगम्बर मुहम्मद सल्ल० के आचरण (उस्वः) से हमें यह विचार भी मिलता है कि दीन व तहजीब का फर्क आपसी मदद और सहयोग की राह में कदापि रूकावट नहीं है। बल्कि विभिन्न धर्मों और सभ्यताओं के मानने वाले अपने मजहबी और तहजीबी नजरियात पर कायम रहते हुए सार्वजनिक हितों के लिए साझे के प्रयास का तरीका इख्तियार कर सकते हैं हमारे आज के समाज में बेशुमार विषय हैं जो एक दूसरे के दीन व मजहब से छेड़ के बिना हमें साझा प्रयास की तरफ बुलाते हैं। यह विषय और समस्यायें ऐसी हैं कि अगर समय रहते इन की तरफ समुचित ध्यान न दिया तो पूरी मानव सभ्यता की अपूर्णीय क्षति पहुंचने का अन्देशः है। अज्ञानता व अशिक्षा, आर्थिक विषमता और अर्थ–विभाजन और दौलत की तक्सीम का गैर आदिलाना निजाम और अन्याय पूर्ण व्यवस्था, उर्थनियत व अशीलता, दुख्तर कुर्शी (कन्या हत्या) और इरू के कारण लिंग अनुपात में पैदा होने वाला खलल, पारिवारिक व्यवस्था का बिखराव, मां–बाप और बुजुर्गों के आदर में आती हुई कमी, जातिवाद, भ्रष्टाचार नशाखोरी और जुल्म व शोषण हमारे हिन्दुस्तानी समाज की वह संयुक्त समस्यायें हैं जिनका मुकाबला इस समाज के तमाम दर्दमन्दों को मिलकर करना होता। और अगर ऐसा न किया गया तो इनके भयावह और नशाखोरी नतीजों से समाज का कोई तब्कः सुरक्षित नहीं रह सकेगा। कुर्आन की ताबीर में "उस आजमाइश से डरो जिसका निशाना तुम में से सिर्फ जालिम लोग ही नहीं होंग। (८–२५)

अतएव आज जरूरत इस बात की है कि रचनात्मक सोच और दर्दमन्द दिल रखने वाले लोग आगे आयें। हमें उन के मजहब और तहजीब से छेड़ किये बिना यह देखने की जरूरत होगी कि वह आम इन्सानों की भलाई (जनकल्याण) और इस मुल्क की तामीर व तरक्की के हवाले से कितने बेचैन है। कुर्आन के शब्दों में निराश कुफ्र की द्योतक है इस दुनिया में पैदा होने वाला हर बच्चा यह एलान करता है कि इन्सानों का खालिक अभी उन से निराश नहीं हुआ है। जब खुदा अपने बन्दों से मायूस नहीं है तो हमें कोई हक नहीं पहुंचता कि हम उससे निराशा और बेजारी को व्यक्त करें। सच्ची भावना और किसी प्रकार के तअस्सुर (धार्मिक पक्षपात) के बिना अगर हम कोशिश करें तो हिन्दुस्तान के तमाम

(शेष पृष्ठ २६ पर)

सवरवरे अंबिया (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

के रौज़-ए-अक़्दस की ज़ियारत बा सआदत का बयान

(इल्मुल फिक्ह से इख़्तिसार के साथ)

मौलाना अब्दुश्शकूर फारूकी (रह०)

ज़ाइर को चाहिए कि जब ज़ियारत के लिए चले तो यह नीयत करे कि मैं क़ब्रे अक़्दस व अतहर और मस्जिदे अनवर हज़रते ख़ैरूल बशर सल्लल्लाहु अ़लैहि वल्लम की ज़ियारत के लिये सफ़र करता हूं। जिस वक़्त से मदीना मुनव्वरा की तरफ़ कूच करे अपने ज़ौक़ व शौक़ को तरक्क़ी दे और रास्ते भर दुरूद शरीफ़ की कसरत रखे सिवा औक़ाते नमाज़ के और कज़ाए हाजत के इस बड़ी इबाबत में मशग़ूल रहे।

मदीना मुनव्वरा के अन्दर पहुंच कर सब से पहले मस्जिदे शरीफ़ में जाए, इस को हर काम पर मुक़द्दम रखे, अगर यह समझे कि सामान वग़ैरह ठीक से न रखा जाएगा तो खो जाएगा तो अपना सामान हिफ़ाज़त से रख कर इत्मीनान से ज़ियारत के लिए आए, मुस्तहब हैं कि पहले कुछ सदक़: करे। मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त एअ़तिकाफ़ की नीयत से पहले दाहना पैर अन्दर रखे और पढ़े: अऊज़ बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रह मानिर्रहीम अस्लामु अ़ला रसूलिल्लाह, अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबीयु व रहमतल्लाहि व बरकातुहू। फिर मस्जिदे शरीफ़ में मुम्किन हो तो मिम्बर के क़रीब वरना कहीं भी दो रकअ़त नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ें, उस के बअ़द दो रकअ़त नमाज़ शुकराने की अदा करें फिर ज़ियारत की तरफ़ तवज्जुह करें, जिस क़दर मुम्किन हो, ज़ाहिर व बातिन से तअ़ज़ीम व अदब का कोई दक़ीक़ा उठा न रखे अर्थात मान व सम्मान में कण भरभी कमी न आने दें, (शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी जज़्बुल क़ुलूब में लिखते हैं:जो बातें शरअ़ में मना हैं जैसे सज्दा करना, मुंह ज़मीन पर रखना, जाली को बोसा देना जैसे कामों से बचें और ख़ूब समझें कि इन में कोई अदब नहीं, अदब तो फ़रमाबरदारी (आज्ञा पालन) और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्मों की पैरवी (अनुसरण) में है।) फिर बड़े अदब के साथ, सरे मुबारक की तरफ़ मुंह कर के और क़िबला की तरफ़ पीठ करके चार हाथ के फ़ासिले पर खड़ा हो, और इस बात का यक़ीन कर ले कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस की हाज़िरी से वाक़िफ़ (अवगत) हैं और उस के सलाम का जवाब देते हैं फिर बा अदब आवाज़ में बड़े शौक़ व ज़ौक़ के साथ अ़र्ज़ करें। अस्लामु अ़लैक या सय्यिदी या रसू लल्लाह, अस्सलामु अ़लैक या नबीयल्लाह, अस्सलामु अ़लैक या हबीबल्लाह (लम्बा सलाम है फिर अल्लाह से दुआ की दरख़्वास्त है, हिन्दी में इतना ही लिखा) जब अपने अ़र्ज़ व मअ़रूज़ से फ़ारिग़ हो तो अपने दोस्तों अ़ज़ीज़ों में से जिस ने सलाम पेश करने को कहा हो उन की तरफ़ से कहे कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फुलां फुलां ने आप को सलाम अ़र्ज़ किया है, नाम याद न आए तो कहे जिन जिन लोगों ने मुझ से सलाम पहुंचाने को कहा है सबकी तरफ़ से सलाम अ़र्ज़ करता हूं आप उन सब के लिए अल्लाह तआ़ला से शफ़ाअ़त करें। इन सतरों को पढ़ने वालों में से जिन ख़ुश नसीबों को हाज़िरी की दौलत नसीब हो उन से इल्तिजा (प्रार्थना) है कि वह इस नाचीज़ का सलाम भी आक़ाए नामदार को पहुंचा दे, और कहे या रसूलल्लाह आप के ग़ुलाम अ़ब्दुश्शकूर बिन नाज़िर अ़ली ने आप की जनाब में सलाम अ़र्ज़ किया है, और आप के लुत्फ़ व करम और रहमत व शफ़ाअ़त का उम्मीदवार है। या रसूलल्लाह अल्लाह तआ़ला ने आप को रहमतुल्लिल आ़लमीन और रऊफ़ुर्रहीम फरमाया है, या रसूलुल्लाह आप की रहमत व राफ़त तो ख़ुदा की तमाम मख़लूक़ को घेरे हुए हैं, या रसूलल्लाह ख़ुदा की मख़लूक़ में मैं भी हूं, मैं आप पर ईमान लाया हूं, अगर्चि नेक बन्दों में नहीं हूं लेकिन आप की उम्मत के गुनहगारों में तो हूं अल्लाह की रहमत हो आप पर और सलामती। जो शख़्स मेरी इस वसीयत को पूरा करे अल्लाह तआ़ला उसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तुफ़ैल में दुन्या व आख़िरत की सलाह नसीब फ़रमाएं और ईमान पर उसकी ज़िन्दगी ख़त्म हो आमीन। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की जनाब में सलामे नियाज़ अपना और अपने अहबाब का अ़र्ज़ कर चुके तो हज़रत अमीरूल मोमिननीन इमामुल मुत्तक़ीन सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु

के सरे मुबारक के सामने बड़े अदब से खड़े होकर सलाम अ़र्ज़ करे :

अस्सलामु अ़लैक या ख़लीफ़त रसूलिल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (अरबी में ज़ियादा है हिन्दी में इतनाही लिखा जा रहा है)

फिर ह़ज़रत अमीरूल मोमिनीन इमामुल मत्तक़ीन ह़ज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सरे मुबारक की सीध में ख़ूब अदब के साथ खड़ा हो कर कहे अस्सलामु अ़लैक या अमीरल मोमिनीन, अस्लामु अ़लैक या मज़हरल इस्लाम (लम्बा सलाम है हिन्दी में इतना ही लिखा जाता है)

फिर जिस तरह पहली बार हजरत सय्यिदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सरे मुबारक के सामने हाथ बान्ध कर खड़ा हो और जो जो ह़ाजतें रखता हो ह़ज़रत के तुफ़ैल में अल्लाह तआला से मांगे फिर बड़े अदब से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सलाम अ़र्ज़ कर के वहां से हटे। और अबूलुबाबा के खम्बे के पास आ कर तौबा करे फिर जिस क़दर नवाफ़िल की तौफ़ीक़ मिले नवाफ़िल पढ़े। याद रहे कि रौज़े के जुनूबी जानिब यअ़नी क़िब्ला की तरफ़ रौज़े की दीवार में चार गोल सूराख़ हैं, उन में • • • • एक गोल सूराख हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सरे मुबारक की सीध में है उसके बग़ल वाला ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के सरे मुबारक की सीध में है और उसके बग़ल वाला ह़ज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) के सरे मुबारक की सीध में है। यह गोल सूराख़ मवाजेह शरीफ़ कहलाते हैं।

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के रौज़े की ज़ियारत के बअ़द और ज़ियारात की जगहों की जियारत करे जिन को मुअ़ल्लिमीन ह़ज़रात बता देते हैं जन्नतुल बक़ीअ़ जाए और वहां के मज़ाराते मुक़द्दसा की ज़ियारत करे, शुहदाए उहद की ज़ियारत करे उन मज़ारात पर जाकर फ़ातिह़ा पढ़े, हफ़्ते के दिन या जिस दिन मुम्किन हो मस्जिदे क़ुबा की ज़ियारत के लिए भी जाए वहां पहुंच कर दो रकअ़त नमाज़ तह़िय्यतुल मस्जिद पढ़े। जितने दिनों मदीने में क़ियाम हो उस को ग़नीमत जाने, जिस क़दर हो सके इ़बादत करे।

अपना अक्सर वक़्त मस्जिद शरीफ़ में गुज़ारे, उस में एअ़तिकाफ़ करे, नमाज़ रोज़ा, सदक़ा जितनी इ़बादतें हो सकें उस मस्जिद में करे। इस मस्जिद शरीफ़ में जब तक रहे अपने दिल और ज़बान और तमाम अअ़ज़ा (अंगों को) को बेकार बातों और ह़रकतों से बचाए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ ध्यान रखे कि मैं उन के दरबार में हाजिर हूं, किसी बात की जरूरत हो तो जरूरत भर बात कर के ध्यान उसी जानिब ले जाए।

मस्जिद शरीफ के अदब का खूब खयाल रखे थूक वगैरह वहां न गिरने पाए, सर या दाढ़ी का बाल वहां न गिरने पाए, गिरा देखे तो उठाले छूहारे खाकर गिठली वगैरह मस्जिद में न डाले।

जब तक मस्जिदे अक़्दस में रहे हुजर–ए–शरीफ़ा की तरफ़ बड़े शौक़ से देखता रहे। कम से कम इस मस्जिद में एक क़ुर्आन मजीद ख़त्म करे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वल्लम के ह़ालात में कोई किताब पढ़े या सुने।

मदीना मुनव्वरह के रहने वालों से बड़े अदब और महब्बत के साथ पेश आए, उन में कोई ख़िलाफ़ शरीअ़त बात देखे तो भी उनकी बुराई न करे, उन से सख़्ती का बरताव न करे। नर्मी और मीठी बोली के साथ उनकी ग़लती को बताए और उस की बुराई समझाए। जब मदीना मुनव्वरा में क़ियाम की मुद्दत ख़त्म हो जाए और उस पाक मक़ाम से चलने लगे तो मस्जिद शरीफ़ को इस तरह रूख़्सत करे कि वहां नमाज़ पढ़े दुआ मांगे और रंज व दुख के साथ वहां से चले, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और शैख़ैन की ज़ियारत करे सलाम अ़र्ज़ करे और अल्लाह तआला से दुआ मांगे कि फिर ह़ाज़िरी नसीब हो दुआ और ज़ियारत की मक़्बूलियत की अ़लामत यह है कि बे इख़्तियार आंसू बह रहे हों, अगर ख़ुदा न करे उस की यह ह़ालत न हो तो वह कोशिश करके अपने ऊपर यह ह़ालत लाए फिर ह़ज़रत से रूख़्सत हो, रूख़्सत होते वक़्त पिछले पैरों न लौटे कि सह़ाब–ए–किराम ने ऐसा नहीं किया।

याद रहे कि मक्का मुकर्रमा के ह़रम में एक रकअ़त नमाज़ का सवाब एक लाख रकआ़त के बराबर मिलता है और मदीना मुनव्वरह में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मस्जिद में एक रकअ़त नमाज़ का सवाब पचास ह़ज़ार रकअ़तों के बराबर मिलता है।

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुह़म्मिदिव्वं अ़ला आलिही व अस्ह़ाबिही व बारिक वसल्लिम।

अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना शफ़ाअ़तहू आमीन।

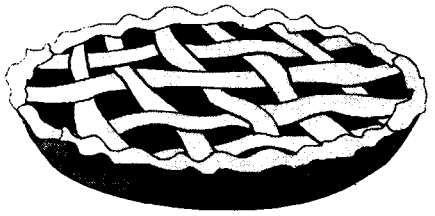

जाड़ो के पोष्टिक हलवे (मिष्ठान)

इदारा

सूजी का हल्वा

सूजी २५० ग्राम, देसी घी ५०० ग्राम में भूनें, फिर ५०० ग्राम चीनी मिलाकर हल कर लें, फिर बंसलोचन, छोटी इलाइची का दाना, दारचीनी तीनों, छः छः ग्रा० गाव जवां, गुले गाव जबां १०, १० ग्राम सालब मिस्री ४० ग्राम इन सब को खूब छान कर मिलाएं, मगजे बादाम शीरीं (मीठी बादाम का गूदा) ३० ग्राम नारियल का गूदा गरी, मीठे कद्दू के बीच का गूदा (मगज कद्दूए शरीरीं) दोनो ४०, ४० ग्राम खूब कूट कर मिला लें मुश्क (कस्तूरी) डेढ़ ग्राम, जअफ्रान डेढ़ ग्राम, चालीस ग्राम क्योड़े में घिस कर के मिला दें यह आप का पौष्टिक हल्वा (मिष्ठान) तैयार हो गया, बीस ग्राम से चालीस ग्राम तक नाश्ते में खाएं, यह हल्वा जच्चा (सूतिका) औरतों के लिए भी बड़ा लाभ दायक है और मरदाना कमजोरी में भी हितकर (मुफीद) है। सस्ता करना हो तो मुश्क न डालें।

गाजर का हलवा

गाजर देसी लाल रंग (इस को काली गाजर भी कहते हैं) तीन कि० छील कर हड्डी दूर करके कद्दूकश में निकाल लें, नारियल (गरी) छुहारा, दोनों ढाई,ढाई सौ ग्राम इन को भी कद्दूकश में निकाल लें, फिर सालब मिस्री, शकाकुल मिस्री, बहमन सुर्ख, बहमन सफेदे, मूस्ली सियाह सब बीस बीस ग्राम कुट छान कर इन सब को ४ कि० गाय के दूध में पकाएं कि खोया सा हो जाए, फिर एक किलो देसी घी में भूनें और दो किलो शकर (चीनी) डाल कर हलवा बना लें फिर उस में मग्जे बादाम शीरीं, मग्जे कदूए शीरीं, कुश्ता कलई (रांगे का भस्म) जायफल, जावितीत्री तीनों ६, ६ ग्राम, इन्दर जौ शीरीं, सतावर २०, २० ग्राम और छोटी इलाची ६ ग्राम भी कूट छान कर मिलाएं फिर जअफ्रान (केसर) तीन ग्राम, मुश्क (कस्तूरी) डेढ़ ग्राम क्योड़ा में हल कर के मिलाएं आप का हलवा तैयार हो गया सस्ता करना हो तो मुश्क न डालें यह सब दवाएं अत्तार (पंसारी के यहां मिलजाएंगी)

यह हल्वा २० से ५० ग्राम तक सुब्ह नाश्ते में खाएं, यह हल्वा मरदाना शक्ति दायक, मुगल्लिजे मनी (वीर्य को गाढ़ा करने वाला) दिल व दिमाग को शक्ति देने वाला, मोटा करने वाला, सुर्अत (शीघ्र वीर्य पतन) को दूर करने वाला और गुर्दे को शक्ति देने वाला है।

घीक्वार का हलवा

घीक्वार का गूदा आधा किलो, सिंघाडे का आटा आधा किलो आधा किलो घी में भूनें सफेद शकर मिला कर हल्वा कर लें फिर उस में से चालीस ग्राम रोज चालीस दिन तक नाश्ते में खाएं। यह हल्वा उन लोगों के लिए जिन के मिजाज में बुहत सर्दी हो, जोड़ों में दर्द रहता हो फालिज या लकवा कभी हो चुका हो, सर्द मिजाज औरतों के लिए बहुत ही लाभ दायकहै, यह हल्वा मर्दाना शक्ति बढ़ाता है, कमर के दर्द और रियाही दर्द में भी लाभदायक है, गर्म मिजाज वाले इस से इहतियात करें।

चने का हल्वा :

अच्छे चने २५० ग्राम प्याज के अरक में भिगोएं, जब फूल जाएं गाय के घी में भून लें फिर उस के बराबर चिलगोजा का मग्ज लें और पीस कर इतने शहद में मिलाएं की गूंथ जाए, फिर उस में मिरचगी रूमी और दारचीनी १०,१० ग्राम पीस कर मिला दें, फिर सीनी में जमा कर कत्लियां काट ले रोजाना नाश्ते में २० ग्राम से ५० ग्राम तक खाया करें यह हलवा मर्दाना शक्ति तथा मेदे (आमाशय) की शक्ति को बढ़ाता है

चने का लाभ

बड़े–बड़े चने छांट कर २० ग्राम चने रात को पानी में भिगो दें, सबह को चने पानी से निकाल कर एक एक चना खाएं और आखिर में बचे हुए पानी में अस्ली शहद मिला कर पी लें, यह मर्दाना शक्ति बढ़ाने में बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ है।

पुष्टिकर नाश्ता :

ताजे अन्डे की जर्दी अलग कर लें, उसी के बराबर प्याज का अरक पीस कर निकालें, उसी के बराबर गाजर का अरक पीस कर निकालें मीठा करने के लिए मिस्री डालें, देसी घी में लाउंगा से बघार कर सब को पका लें, हल्वा सा हो जाए तो नाश्ता करें। प्याज गाजर के बचे गुज्झे को चिकनाई में भून कर सब्जी बना लें। अण्डे की सफेदी सब्जी में मिला लें।

दुआ में तवस्सुल की एक हदीस की तहकीक

इरफान फारूकी नदवी

हजरत उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब आदम अलैहिस्सलाम से गलती हुई तो उन्होंने अल्लाह से यह दरख्वास्त की कि ऐ अल्लाह! मैं बावस्त–ए–मुहम्मद (सल्ल०) के दरख्वास्त करता हूं कि मेरी मगफिरत कर दीजिए तो हक तआला ने फरमाया - ऐ आदम! तुमने मुहम्मद को कैसे पहचाना जब कि मैंने उनको अभी पैदा भी नहीं किया। हजरत आदम ने कहा कि ऐ रब! मैंने इस प्रकार पहचाना कि आपने मुझको अपने हाथ से पैदा किया और अपनी रूह मेरे अन्दर डाली तो मैंने जो सर उठाया। तो अर्श के पायों पर लिखा देखा लाइलाह इल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह इससे मुझे पता चल गया कि आपने अपने नाम के साथ ऐसे ही शख्स का नाम मिलाया होगा जो आपके यहां पूरी मखलूक (सृष्टि) से प्यारा और चहीता होगा। अल्लाह तआला ने फरमाया ऐ आदम ! तुम सच्चे हो, वास्तव में वह मुझे पूरी मखलूक (सृष्टि) से प्यारा और महबूब है फिर जो तुमने उनके वास्ते से मुझे से दरख्वास्त की है तो मैंने तुम्हें माफ कर दिया और अगर मुहम्मद (सल्ल०) न होते तो मैं तुझको भी पैदा न करता और अल्लाह तआला ने यह भी फरमाया कि वह तुम्हारी औलाद में सबसे आखिरी नबी हैं। इस हदीस को हाकिम ने मुस्तदरक में ६१५/२ और इब्ने असारकिर ने ३२३/२ और बैहकी ने दलाइलुन्नुबूवति में ४८८/५ पर रिवायत किया है।

हाकिम ने कहा कि इस हदीस की सनद सही है। लेकिन अल्लामा जहबी ने मुस्तदरक की तल्खीस में लिखा है कि यह हदीस मौजूअ (मनगढ़न्त) है और अपनी दूसरी किताब मीजानुल एतिदाल में अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम फेहरी के जीवनी में लिखा है कि यह हदीस बातिल (झूठ) है। हाफिज इब्ने हजर अस्कलीन ने "लिसानुलमी जान" में अल्लामा ज़हबी के हुक्म को सही बताया है। इमाम बैहकी ने हदीस के एक रावीं अब्दुर्रहमान बिन जैद बिन अस्लम को ज़ईफ (कमज़ोर) लिखा है। अल्लामा इब्ने तैमिया ने "अलकाइदतुल जलीला फित्तवसुवलवसीला पृष्ठ ६६ पर लिखा है कि इमाम हाकिम की इस हदीस को अपने किताब में नकल करने की वजह से आलोचना की गई है क्योंकि उन्होंने अपनी दूसरी किताब "अलमदखल" में इस हदीस के एक रावी अब्दुर्रहमान बिन जैद बिन असलम के बारे में स्वयं लिखा है कि वह अपने बाप से झूठी हदीसें नकल करता है और हदीस के आलिम जानते हैं कि यह हदीस भी वहीं से उसने ली होगी। अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को मौजूअ (मनगढन्त) कहा है।

विस्तार के लिए देखें (सिलसलतुल अहादीसिस जईफा वल मौअजूआ पृ० ८८–६०/१) मैं कहता हूं कि यह हदीस कुरआन के भी विरूद्ध है। सूरः बकरा आयत ३५ – ३७ में है "हम (अल्लाह) ने कहा ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और जी भर कर खाओ पियो जिस जगह से चाहो मगर इस पेड़ के नजदीक न जाना वर्ना जालिमों में से हो जाओगे। बस फिसला दिया शैतान ने उन को फिर निकलवाया वहां से जिस आराम की जगह वह थे, और हमने कहा तुम सब यहां से उतरो तुम एक दूसरे के दुश्मन हो और तुम को जमीन में रहना है और काम चलाना है एक वक्त तक। फिर सीख लिए आदम ने अपने रब से कई शब्द, फिर उसको अल्लाह ने माफ कर दिया बेशक वही है तौबा कबूल करने वाला मेहरबान।"

यह कुछ शब्द क्या थे??? सूरः अलआराफ में है। "फिर जब उन दोनों ने उस पेड़ (में से) को चरवा तो उनकी शर्मगाहें उनके सामने खुल गईं और वह अपने ऊपर बाग के पत्ते जोड़–जोड़ के रखने लोग, तब उन के रब ने उनको पुकारा क्या मैंने तुम दोनों को इस पेड़ से रोका न था और तुमसे कहा न था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है? दोनो बोले "हमारे रब हमने अपने आप पर जुल्म किया, अब अगर तूने हमें माफ न किया और हम पर रहम न किया तो फिर हम घाटा उठाने वालों में होंगे। (अलअराफ–२२–२३) यह हैं वह शब्द जिनसे हजरत आदम ने दुआ मांगी थी। दूसरी बात इस हदीस का आखिरी टुकड़ा और मुहम्मद न होते तो तुमको पैदा ही न करता।" या इसी प्रकार की दूसरी हदीस कि अगर मुहम्मद (सल्ल०) न होते तो मैं ब्रहमाण्ड को न बनाता को भी अल्लामा सखावी और अल्लामा अजलूनी ने मौजूअ कहा है। क्योंकि यह हदीस कुरआन की इस आयत के भी विरूद्ध है । अल्लाह तआला फरमाता है हमने जिन्न व इन्सानों को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। (सूरः ज़ारियात आयत नं० – ५६)

भारतीय इतिहास

प्रो. श्रीनेत्र पाण्डेय

अशोक का प्रारम्भिक जीवन काल : अशोक बिन्दुसार का पुत्र और चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र था। उसकी माता चम्पा निवासी एक ब्राहमण की कन्या थी। वह ब्राह्मण बिन्दुसार को अपनी रूपवती, दर्शनीय कन्या उपहार (भेंट) के रूप में दे गया था। अंतःपुर की कन्या रानियां उसके असीम सौन्दर्य से आतंकित हो उठीं और उन्होंने उसे नाइज (नौकरानी) के रूप में रनिवास में रखा। कालान्तर में सम्राट को इस रहस्या का पता लग गया और उस ने उसे अपनी पटरानी बना लिया। ब्राह्मण–कन्या से बिन्दुसार के दो पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें से एक का नाम अशोक और दूसरे का नाम विगत शोक रक्खा गया। अशोक की मां का नाम कई ग्रंथों में धम्मा मिलता है परन्तु कुछ ग्रंथों में उसे सुभद्रांगी अर्थात अच्छे अंग वाली कहा गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि धम्मा उसका बचपन का नाम था और अत्यन्त रूपवती होने के कारण उसका नाम सुभद्रांगी पड़ गया। कुछ विद्वानों के विचार में अशोक सिल्यूकस की कन्या का पुत्र था जिसका विवाह उसने चन्द्रगुप्त के परास्त होन के बाद बिन्दुसार के साथ कर दिया था, परन्तु इसका कोई विश्वस्त प्रमाण नहीं है। अशोक के कई पत्नियां थीं जिसमें देवी सबसे अधिक प्रसिद्ध है। वह विदिशा के एक श्रेष्ठ (व्यवसायी) की कन्या थी जिसका नाम देवी था। इस देवी की संतान महेन्द्र तथा संघ मित्रा थे जिन्होंने बौद्धधर्म के प्रचार में बड़ा योग दिया था। अशोक की एक दूसरी पत्नी का नाम पदमावती था जिससे कुणाल नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। अपने पिता के जीवन काल में ही अशोक ने शासन का काफी अनुभव प्राप्त कर लिया था क्योंकि वह अवन्ती (उज्जयिनी) तथा तक्षशिला का प्रांतपति रह चुका था। इससे स्पष्ट है कि बिन्दुसार को अशोक की कार्य कुशलता, विवेकशीलता तथा वीरता में पूरा विश्वास हो गया था अन्यथा वह सुदूरस्थ प्रांतों में इतने महत्वपूर्ण पद पर उसे नियुक्त न करता। अशोक का सिंहासनारोहण : महावंश नामक ग्रंथ में लिखा है कि बिन्दुसार के एक सौ पौत्र थे जिनमें विगत शोक ही अशोक का सगा भाई था और शेष सब उसके सगे भाई न थे। इनमें सुमन अथवा सुसीम सबसे बड़ा था। अशोक सुमन से छोटा और शेष भाइयों से बड़ा था। वह अपने सभी भाइयों से अधिक तेजस्वी था। अर्थात भारतवर्ष पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था। यद्यपि भाइयों की हत्या की कथा कपोल कल्पित और बौद्ध आचार्यों की मनगढंत प्रतीत होती है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि अशोक को अपने बड़े सौतेले भाई सुसीम के साथ संघर्ष करना पड़ा था। विभिन्न सूत्रों से यह पता लगता है कि बिन्दुसार सुसीम को अधिक प्यार करता था। और उसी को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण नैतिक दृष्टि से भी उसी को सिंहासन मिलना चाहिए था। परन्तु अशोक अपने भाइयों में सबसे अधिक योग्य था और अवंत तथा तक्षशिला में सफलतापूर्वक शासन करके और तक्षशिला के विद्रोह को शान्त करके वह अपनी वीरता तथा शासन–कुशलता का पूरा परिचय दे चुका था अतएव प्रधानमंत्री खल्वाटक तथा अन्य अमात्य उसी को राजा बनाना चाहते थे। फलतः जब बिन्दुसार की मृत्यु हो गई तब अशोक तथा सुसीम में संघर्ष अवश्य हुआ। इस संघर्ष का बहुत बड़ा परिणाम यह है कि अशोक का राज्याभिषेक उनमें सिंहासनरोहण के चार वर्ष बाद हुआ था। संभवतः भाइयों के पारस्परिक संघर्ष के कारण ही यह विलम्ब हुआ था। अतएव अधिकांश विद्वानों की यह धारणा है कि हो सकता है इस युद्ध में सुसीम तथा उसके कुछ अन्य भाइयों की हत्या हो गई। अशोक के अभिलेखों में भी यह पता लगता है कि उसके राज्याभिषेक के बाद भी दिखाने के लिए बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लेने पर एक क्रूर तथा हत्यारा व्यक्ति भी उदार तथा दयावान बन सकता है, अशोक द्वारा ९९ भाइयों की हत्या की कथा का आविष्कार कर लिया।

अशोक की विजय – सिंहासनरोहण के उपरान्त अशोक ने अपने पिता बिन्दुसार तथा अपने पितामह चन्द्रगुप्त की साम्राज्यवादी नीति को जारी रखा। सिल्यूकस पर विजय प्राप्त

करने के उपरान्त चन्द्रगुप्त ने विदेशियों के साथ मैत्री रखने तथा सम्पूर्ण भारत पर अपना एक छत्र साम्राज्य स्थापित करने के लिए उसने दिग्विजय की नीति का अनुसरण किया। उसने उन पड़ोसी राज्यों पर, जो साम्राज्य के बाहर थे, आक्रमण करना आरम्भ कर दिया।

काशमीर विजय : यद्यपि चन्द्रगुप्त ने संपूर्ण पंजाब पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था परन्तु काशमीर उसके साम्राज्य के बाहर था। अतएव अशोक ने उस पर विजय प्राप्त कर उसे अपने राज्य में सम्मिलित कर लेने का निश्चय कर लिया। काशमीरी लेखक कल्हण की राजतरंगिणी से हमें ज्ञात होता है कि अशोक ने काशमीर पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था।

कालिंग विजय :

कालिंग का राज्य अशोक के साम्राज्य के दक्षिण पूर्व में जहां आधुनिक उड़ीसा का राज्य है स्थित था। अशोक के सिंहासनारोहण के समय वह पूर्णरूप से स्वतंत्र तथा उसकी गणना बड़े ही शक्तिशाली राज्यों में होने लगी थी। कलिंग के राजा ने एक विशाल सेना का संगठन कर लिया था और अपने राज्य को सुदृढ़ बनाने मे संलग्न था। ऐसे प्रबल राज्य का मगध–राज्य की सीमा पर रहना बड़ा ही आपत्तिजनक था और सम्राट् अशोक की दिग्विजय–नीति के विरूद्ध पड़ा था। अतएव अपने सिंहासनारोहण के तेरवहें, वर्ष और अपने राज्यभिषेक के नवें वर्ष अशोक ने कालिंग पर एक विशाल सेना के साथ आक्रमण कर दिया यद्यपि कलिंग के सेना बड़ी वीरता तथा साहस के साथ लड़ी परन्तु वह अशोक की विशाल सेना के सामने ठहर न सकी और अन्त में परास्त होकर भाग खड़ी हुई। कलिंग पर अशोक का अधिकार स्थापित हो गया और उसने अपने एक प्रतिनिधि को वहां का शासक नियुक्त कर दिया। इस प्रकार कलिंग मगध–साम्राज्य का एक अंग बन गया।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

पाएगा। उसने और फूफी ने कई दिनों से भरपेट नहीं खाया। शहर में आतंक के कारण कई दिनों से दुकानें नहीं खुलीं, तो क्या हुआ? वह बस्ती की दुकान का पिछला दरवाजा खुलवा लेगा ... और .... और ....।

भावों के उद्दाम सागर में इधर से उधर डोलता वह घर को लौट रहा था। आकाश पुनः मेघ खण्डों से प्रच्छन्न होने लगा। वर्षा का पहरा फिर से बढ़ने को हुआ। सोचा आज तो समय पर पहुंच जाऊंगा। और मुन्नी! सहसा उसके भाव विच्छिन्न हो गये। पीछे से किसी ने उसकी रिक्शा पर प्रबल प्रहार किया। उसने गांव की गति रोक दी। पीछे मुड़कर देखा, वर्दी वाले उसे ललकार से कह रहे थे। एक ने कहा,

"कहां से आ रहे हो ... ?

दूसेर ने पूछा –

"क्या उड़ा कर लाए हो .... ?"

"जेब दिखाओ ...।"

"साले! जानते नहीं इधर कर्फ्यू है ... मार–मार खाल उधेड़ दूंगा ... उतर नीचे।

और दूसरे वर्दी वाले ने जग्गू के बालों को पकड़कर नीचे पटक दिया। कड़ककर कहा, मानो यह बिजली भी आकाश की हो –

निकाल क्या है? आज दिन भर भूखा ही रहा ... "

"नहीं, नहीं मुझे छोड़ दो ... मुझे जाने दो ... मेरे पास .... मेरे " जग्गू गिड़गिड़ाने लगा।

"भागवान के लिए मैं आपके पांव पड़ता हूं... "

वर्दी वाले ने तुरंत उसकी जेब से दस का नोट झपट लिया–

"साला –छिपा कर दादागिरी करता है।"

"नन्हीं–नन्हीं, यह नोट मत लो, मेरी बच्ची बहुत बीमार है, उसने तीन दिनों से कुछ नहीं खाया।"

पहले वर्दी वाले ने बिना सुने एक लाठी पीठ के नीचे दे मारी –

दस देकर ही छुटकारा हो गया ... हूं ... बच्ची बीमार है ... हम क्या तुझे तंदुरुस्त नजर आते हैं, पुनः वह अपने साथी से बोला –

"सूरज, देखा जरा उधर ... ठेके का चोर दरवाजा अभी खुला होगा। सुबह से गला सूख रहा है, जा ..."

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, ऐसा ही पट्ठा एक और मिल जाए तो ... "

दोनों ठहाका मार कर हंस पड़े। वर्दी वाले ने तुरंत ठेके से अद्धा लेकर ओंठों से लगा लिया और बाकी दूसरे को दे दिया। "ले यार ... कुछ तो आसरा हुआ।" और शराब से सनी मूंछों को साफ करते हुए वर्दी वाले दूसरे शिकार की खोज में एक ओर सरक गये। कीचड़ सने शरीर को संभालकर जग्गू ने उठने का प्रयास किया। पांव साथ नहीं दे रहे थे। असमंजस और अनिश्चय, वेदना और व्यथा–घर या सड़क, कुछ भी निर्णय नहीं कर पाया। आसमान से गाज गिरी, धरती पर कहा ढाया और जग्गू के नेत्र बरस उठे। भीगी पलकों ने आकाश की ओर देखकर आह भरी – "ईश्वर यह आतंक–दर–आतंक, आखिर कब तक...?"

फज़ाएले जुमा

अबू ओमामा

जुमे का दिन बहुत ही बाबरकत और अज़ीम नेमत है जो अल्लाह तआला ने इस उम्मत को अता फरमाई है। जितनी बड़ी नेमत होती है उतनी ही उसकी कद्र करना चाहिए जो लोग जुमे की नमाज से ग़ाफिल रहते हैं अल्लाह तआला उनसे बेहद नाराज़ होता है। बन्दा तो हर बात मे मोहताज है अल्लाह तआला ने जुमा जैसी अज़ीम नेमत उसे अता फरमाई है। वह ज़रा सी फिक्र करके बाआसानी अल्लाह तआला की रहमत और जन्नत हासिल कर सकता है। इसीलिए जो शख्स तीन जुमा बगैर किसी उज़्र के छोड़ दे तो अल्लाह तआला उसके क़ल्ब पर मोहर कर देता है और फिर वह किसी लायक नही रह जाता और दोज़ख ही उसका ठिकाना हो सकती है इल्ला ये की तौबा करे और अपने अहवाल दुरुस्त कर ले। इसलिए जुमा हरगिज़ हरगिज़ न छोड़ना चाहिए और पूरे एहतमाम के साथ नमाज जुमा मे शामिल होना चाहिए। जुमा के रोज कुरान से सूरह कहफ़ पढ़ने की ताकीद है।.

● जुमे के रोज घर से मस्जिद जाने वाले को हर कदम पर एक साल की नमाज़ और एक साल के रोज़ों का सवाब मिलता है। (हदीस) ये इतना अज़ीमुश्शान सवाब है कि आदमी को जुमे के रोज़ अच्छी तरह ग़ुसुल करके अच्छे कपड़े जो मयस्सर हों पहन कर सवेरे मस्जिद जाना चाहिए। और जहॉ ज़गह पाए बैठे लोगों की गरदन फलॉगते हुए आगे बढ़ने की कोशिश न करे। मिसवाक का इस्तेमाल और खुशबू लगाना इस रोज़ सुन्नत है।

● फरिश्ते मस्जिद के दरवाजे पर होते हैं जो शख्स अव्वल वक्त पर यानी ठीक ज़वाल के वक्त मस्जिद मे दाखिल होता है उसे एक ऊँट की कुरबानी का सवाब मिलता है और उसके बाद जाने वालों के हक़ मे दर्जा ब दर्जा एक बकरा फिर एक मुर्ग़ फिर एक अण्डे का सवाब फरिश्ते लिखते है। जब इमाम खुतबे के लिए मेम्बर पर बैठता है तो फरिश्ते किताब बन्द करके खुतबा सुनने मे मसरुफ हो जाते हैं ।

● खुतबा ग़ौर से और तवज्जुह से सुनना चाहिए, आवाज़ खवाह उस तक पहुँचे या न पहुँचे ध्यान उसी तरफ रहना चाहिए ।

● मस्जिद मे जो शख्स जमाअत से नमाज़ पढ़ता है अल्लाह तआला उसका सवाब २७ गुना ज्यादा कर देते हैं मसलन दो रकत घर पर पढ़े अकेला तो दो रकत का सवाब है लेकिन मस्जिद मे जमात से पढ़े तो ५४ रकअतों का सवाब मिलेगा।

● खुतबे के लिए जब इमाम मेम्बर पर बैठता है तो खुतबे की इबतिदा से आखिर तक के दरमियान अल्लाह तआला दुआऐं ज़रुर क़बूल फरमाता है। किसी गुनाह की दुआ हरगिज़ न करना चाहिए ।

● जुमे के रोज सदक़ात और खैर खैरात का सवाब बहुत ज़्यादा है हदीस मे आया है कि आदमी एक हक़ीर रक़म अल्लाह की राह मे देता है, अल्लाह तआला उसे बढ़ाते बढ़ाते पहाड़ के बराबर कर देता है और यही अज्र बन्दे को मिलता है।

● जुमे के रोज़ दरुद पढ़ने की बड़ी ताकीद आयी है। सौ से एक हजार मरतबा पढ़ना चाहिए । जो शख्स एक बार दरुद पढ़ता है अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फरमाता है।

● नमाज़ पंजवक़्ता एहतमाम से पढ़ना चाहिए सबसे पहले नमाज़ की पूछ होगी अगर नमाज़े पूरी निकलीं तो इन्शा अल्लाह उसके लिए जन्नत है वरना हो सकता है कि अज़ाब में मुबतिला हो जाए।

यादगारे मदीना

अज़ीज़ुल हसन मजजूब

कहां हिन्द में वो बहारे मदीना
मैं और बस यादगारे मदीना
मेरा दिल है बस इख्तिसारे मदीना
कि इस में बसा है दयारे मदीना
जहे इज्जतो इफ्तिखारे मदीनी
शहे दो जहां ताजदारे मदीना
है अर्श आशिया खाक्सारे मदीना
है कुर्सी नशीं रह गुजारे मदीना
करें कुछ यूं ही शौके दिल अपना पूरा
करें आओ जिक्रे दयारे मदीना
वह हर सूं खजूरों कि दिलकश कतारें
वो कुहसार वो सब्ज़ा ज़ारे मदीनी
वो मस्जिद, वो रौजा, वो जन्नत का टुकड़ा
खुशा मंजरे पुर बहारे मदीना

आतंक-दर-आतंक

डॉ० ज्ञान सिंह मान

उसकी बच्ची को तेज बुखार था। तीन दिन और तीन रातें, वह इसी प्रकार अर्द्धचेतन–सी अवस्था में पड़ी थी। कभी–कभी नन्हें ओंठ फड़फड़ाते – 'पापा तुम कहां हो?" "फूफी तुम?"

सहसा उसका ध्यान टूटा, सहमी आवाज कानों में पड़ी, "जग्गू–यह लो–"

अपन नाम सुनकर उसके होंठों पर व्यंग्य मुस्कान दौड़ गयी। अभावग्रस्त जीवन भी कैसी विडम्बना है। जैसे–जैसे उसकी आर्थिक स्थिति बिगड़ती गयी, घर का सामान एक–एक करके कबाड़ी की दुकान पर पहुंचता रहा। इसी दौरान उसका नाम जगन्नाथ प्रसाद से सिकुड़कर कब जगन फिर जग्गू तक सिमट आया, उसे पता नहीं।

आकाश में सहसा बिजली कड़की, वर्षा और तेज हो गयी। तीन दिन की इस स्थिति में कोई सुधार नहीं था। पुराने घर की छत टपक–टपक कर भीतर और बाहर का अन्तर मिटा रही थी। जग्गू ने आह भरी, भारी पलकों से एक बार बीमार बच्ची की ओर देखा, पुनः नजर टप–टप करती छत पर टिक गयी। वही स्वर पुनः उभरा–

"जग्गू – ले जाओ और मुन्नी के लिए दवा ले आओ।"

थकी पलकें ऊपर उठीं, जग्गू ने कहा, "नहीं फूफी, ले–देकर यही गहना बचा है तेरा, मुन्नी की मां के बाद तुम ही तो, सब कुछ नहीं अब रहने दो।"

फूफी ने मुन्नी के माथे पर हाथ रखते हुए सांत्वनामय स्वर में कहा –

"नहीं रे, मेरे पास भी यही कुछ है। दवा ले आओ।"

"नहीं फूफी, बारिश बंद हो जाने दो, आज तो कुछ न कुछ ... "

"क्या होगा रे ! बारिश बंद हो जाए तो, उधर पुल पार का कर्फ्यू तो नहीं हटेगा। आज दस दिन हो गये, जाने यह संसार कैसे चलता है।" बूढ़ी फूफी ने दीर्घ श्वांस ली। जग्गू का ध्यान सहसा विकेन्द्रित हो गया। स्टेशन के पार मानव के संकीर्ण अहम का नग्न प्रदर्शन हुआ था। मेरे और तेरे की संज्ञाओं में बांटने वालों के बर्बर हाथोंएक साथ पन्द्रह व्यक्तियों की निर्मम हत्या–एक भयावह प्रदर्शन, आतंक की नारकीय कालिमा। मानव के हाथों मानव का संहार .... यह सब ओफ! जग्गू ने मस्तक झटक दिया। एक लंबी सांस . ... आकाश में छाये मेघ शायद पुनः पानी पीने इधर–उधर बिखरने लगे, बारिश थमी, जग्गू ने कीचड़ में से रिक्शा धकेलते हुए कहा, "फूफी ! चिंता न करो। देखूं सिविल लाइंस में कोई सवारी मिल जाए। स्टेशन से इस ओर तो कर्फ्यू नहीं है।"

"लेकिन जग्गू... " पुनः फूफी ने बीमार बच्ची की ओर देखा, एक आह–सी भर दी ....।

"कुछ और न बन पाये तो एक डबलरोटी जरूर लेते आना, हकीम कहता था, कोई हल्की गिजा जरूर देना।"

"अच्छा फूफी ... "

और वह निकल पड़ा सवारी की खोज में उस आतंक की गहरी छांव तले। घोर वष्र के परिणाम स्वरूप जहां–तहां पानी के तालाब से बने पड़े थे। इस पर उसकी पुरानी रिक्शा, ऊपर से खाली पेट और खाली जान का परिश्रम, कौन सहन करेगा यह सब? अभी पिछले सप्ताह ही उसकी रिक्शा एक भारी भरकम गाड़ी से अटक कर नीचे से ऊपर तक चरमरा उठी थी। उसे फिर से सड़क पर लाने में पिछली सारी बचत खत्म हो चुकी थी। अब तो जेब ...।

वह स्टेशन की ओर से उन्मुख होकर गुजर रहा था। गाड़ी लगने का समय था। शायद कोई यात्री मिल जाए, इसी उधेड़बुन में आगे तक चला आया। उसी समय कुछ शब्द कानों में पड़े –

"क्यों भाई चलोगे ?"

"कहां?"

"राजापुरा रोड"

"बहुत दूर है ... "

"तो ... "

जग्गू ने यात्री के भारी सामान की ओर दृष्टि डालते हुए कहा –

"नहीं बनेगा ... इस बारिश में ... और कर्फ्यू भी है ... बहुत घूम कर जाने का होगा।

"बताओ तो सही ... " यात्री ने थूक गले से नीचे करते हुए, उमड़–घुमड़ आते मेघ खंडों की ओर देखते हुए कहा। "दस रूपये होंगे... "

"ऐं ... द .... द.... दस रूपये ..." यात्री की वाणी अटक रही थी।

"नहीं तोऔर देख लो ... शहर भर में कर्फ्यू है, कौन रिस्क लेगा।"

"अच्छा भाई, चलो ... " यात्री मानो हर प्रकार से थक गया था।

और रिक्शा चल दी राजपुरा रोड की ओर। जग्गू का मन सहज होने लगा। इतने दिनों के बाद वह अपनी बच्ची की दवाई खरीद सकेगा, उसके लिए हल्की गिजा डबलरोटी का प्रबंध कर

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

अमेरिका पाक के लिए आपात योजना बनाये

वाशिंगटन, २२ अक्टूबर : अमेरिकी सरकार को पाकिस्तान के लिए आपात योजना तैयार करनी चाहिए। उन हालात के लिए जब वहां परवेज मुशर्रफ का शासन खत्म होता है। डेमोक्रेट सांसद जेन हारमैन ने यह बात कही है। प्रतिनिधि सभा में इंटेलीजेंस पैनल के सदस्य ने इस योजना की जरूरत इस कारण बताई कि पाकिस्तान में परमाणु हथियार हैं। उनके मुताबिक पाकिस्तान बुरे दौर से गुजर रहा है। हारमैन ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो के काफिले पर हुए हमले को रोकने के लिए कुछ अधिक व्यवस्था किए जाने की जरूरत थी। उन्होंने पाकिस्तान के कबायली इलाकों की स्थिति पर भी चिन्ता प्रकट की जहां तालिबान और अलकायदा के उग्रवादी हैं। उन्होंने कहा पाकिस्तान के कबायली इलाकों पर उनका मुशर्रफ का वास्तव में नियंत्रण नहीं है। कबायली इलाके अलकायदा की गतिविधियों के नए इलाके हैं। हो सकता है विगत में भी रहे हों। यह भयावह स्थिति है।

कलाम ने की अंतरिक्ष परिषद बनाने की वकालत

भारत के मिसाइल कार्यक्रम के जनक और पूर्व राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम ने विश्व अंतरिक्ष परिषद बनाने की वकालत की है ताकि अंतरिक्ष सुरक्षा और दूसरे ग्रह के अभियानों पर नजर रखने में सहूलियत हो सके। उन्होंने नयी खोज के लिए नौजवानों के मस्तिष्क को प्रेरित करने की जरूरत पर भी बल दिया।

राइस विश्वविद्यालय में व्याख्यान के दौरान कलाम ने कहा कि अगर अंतरिक्ष शोध में साझा प्रयास को गति दिया जाये तो इसका फायदा पूरी दुनिया को मिलेगा। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष परिषद बना लिया जाये तो इससे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्वांटम उछाल मिलेगा। उन्होंने कहा कि यह अंतरिक्ष खोज, अंतरिक्ष सुरक्षा और दूसरे ग्रहों के अभियान की योजना और तरीकों पर नजर रखेगी। नयी पीढ़ी के मस्तिष्क को ज्ञान से आलोकित करने की जरूरत है ताकि वे विश्व अंतरिक्ष दृष्टि २०५० को हासिल करने के लिए अनुसंधान कर सकें।

कलाम को डाक्टरेट आफ साइंस की उपाधि

लन्दन पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को यहां के वूल्वहैंपटन विश्वविद्यालय ने डाक्टरेट आफ साइंस की मानद उपाधि से सम्मानित किया है। कलाम को यह उपाधि वैज्ञानिक शिक्षाविद और राजनेता के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में उनके महत्वपूर्ण स्थान के लिए दी गई है।

वूल्वरहैंपटन विश्वविद्यालय परिसर में सोमवार शाम आयोजित एवं समारोह में प्रवासी भारतीय उद्योगपति लार्ड स्वराज पाल और विश्वविद्यालय के चांसलर ने ७६ वर्षीय कलाम को मानद उपाधि से सम्मानित किया। कलाम को भारत और विदेश में अब तक डाक्टरेट की ३३ मानद उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। क्रिएटिव लीडरशिप विषय पर अपने विशेष संबोधन में कलाम ने परमाणु और अंतरिक्ष के क्षेत्र में विक्रम साराभाई और सतीश धवन, विज्ञान के क्षेत्र में सीवी रमन, उद्योग के क्षेत्र में जमशेद नौरोजी टाटा के विचारों और नेतृत्व को याद किया।

आस्ट्रेलिया में इस्लामी तालीमात (शिक्षा) केन्द्र का उद्घाटन

आस्ट्रेलिया ने अपना इस्लामी स्टडीज का राष्ट्रीय केन्द्र खोला है। मेलबोर्न विश्वविद्यालय में इस केन्द्र का उद्घाटन करते हुए शिखा मंत्री इन्ड्रयवाब ने कहा कि हमारा उद्देश्य यह है कि मुस्लिम कलचर के बारे में अज्ञानता (लाइलमी) दूर हो बेहतर जानकारी प्राप्त की जायें ताकि आस्ट्रेलिया की जनता मुस्लिम कलचर के बारे में सन्तुलित फैसला कर सके।